द्वितीय अध्याय

"क्रांतिवीर तात्या टोपे" उपन्यास के

तत्वों का अनुशीलन

द्वितीय - अध्याय

१] तात्त्विक अध्ययन :-

श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द के " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास का अनुशीलन विद्वानों व्दारा गिनाए हुए निम्नलिखित तत्त्वों के आधार पर करने का हमारा प्रयास है -

(A) कथावस्तु या कथानक
(B) पात्र एवं चरित्र-चित्रण
(C) कथोपकथन या संवाद
(D) देशकाल तथा वातावरण
(E) भाषा
(F) शैली
(G) शीर्षक
(H) उद्देश्य

(A) कथावस्तु :

कथावस्तु को अँग्रेजी साहित्य में प्लाट [plot] कहा जाता है। यह उपन्यास का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है, क्योंकि उपन्यास कला की पूर्ण सफलता कथानक के चयन पर ही निर्भर है। उपन्यास का संपूर्ण ढाँचा कथानक के आधार पर ही खडा होता है। अस्त-व्यस्त घटनाएँ कथावस्तु का निर्माण नहीं कर सकती। घटनाओं के कलापूर्ण गूँथना उपन्यासकार की सफलता है। प्रवीण नायक लिखते हैं, - " मानव जीवन को क्रिया-कलापों और घटनाओं को, किसी विशिष्ट योजना की दृष्टि और क्रम से संगठित करना ही कथानक कहलाता है। " विचारक कथावस्तु में रोचकता, संभाव्यता और मौलिकता नामक तीन गुण आवश्यक मानते हैं। "[३] यह सत्य है कि, उपन्यासकार अपने कथावस्तु का चुनाव इतिहास, पुरान, जीवनी या अन्य किसी भी क्षेत्र से कर सकता है। ऐतिहासिक कथानक के चुनाव के समय युगीन, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियोंका उसे पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। कथावस्तु उपन्यास का मूल है। इसका उपन्यास में वही स्थान हैं, जो कि शरीरमें हड्डियों का। कथावस्तु में युग और प्रदेश में कथावस्तु का संबंध होना चाहिए। कथावस्तु प्रारंभ,

मध्य और अंत इन तीन भागोंमें बाँट दी जाती है। उपन्यास का प्रारंभ और अंत परिणामकारक होना उपन्यास की सफलता का मानदण्ड माना जाता है।

श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्दजी ने " क्रान्तिवीर तात्या टोपे " शीर्षक ऐतिहासिक उपन्यास की कथा का प्रारम्भ करने के पूर्व तत्कालीन राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों का उल्लेख कर कथा की पृष्ठभूमि का स्पष्टीकरण कर दिया है। तात्या टोपे की शूरवीरता के साथ रणकौशल और सफल छापामार युध्द की पध्दति पर उनके यशास्वी क्रियाकलापोंको प्रकाशित कर जनमानस को प्रभावित किया है। १२ विभागों में विभाजित आलोच्य उपन्यास कीकथावस्तु संक्षेप में इसप्रकार है:-

[१]

प्रस्तुत उपन्यास के प्रारंभ में समर्थ स्वामी रामदास के शिष्य स्वामी ज्ञानदास जी के अध्यात्मचिन्तन में उपलब्ध देशभक्ति की भावना विवेचनकर क्रांतिवीर तात्या टोपे के यशास्वी जीवन की भाव-भूमिका ही को जन्म दिया गया है। ईस्ट इंडिया कंपनी के नाम पर व्यापार करनेवाले अँग्रेज जब इस देश की राजनीति में छल-छद्म से प्रविष्ट हो गए, तब समूचा भारत परतंत्रीय पाश में बँध जाने जैसे भयानक मोड पर आ गया। ऐसी विषम घडी में संतों के रूप में स्वामी ज्ञानदास जी ने अपने आश्रम में उपस्थित पेशवा बाजीराव व्दितीय तथा पांडुरंगराव और उनके पुत्र रामचंद्रराव [भावी तात्या टोपे] को अँग्रेजों की कुटिल राजनीति पर कटाक्ष करते हुए कहा कि, - " अंतिम क्षण तक जो व्यक्ति निराश नहीं होता, वही वास्तविक वीर होता है और वास्तविक वीर ही स्वतन्त्रता का सफल सैनिक बन सकता है। तुम पर जो आघात हुआ है, वह तुम्हारा शासकत्व का दम्भ नष्ट करके तुम्हे सामान्य जनों के साथ खडा कर देगा। यह तुम्हारे लिए महान वरदान सिध्द होगा। " आगे स्वामीजी स्वाधीनता के समर्पित होने एवं दीर्घकाल तक चलनेवाले संग्राम ने सम्मिलित होने का आग्रह करते हुए समझाते हैं - "[3] यह न समझ लेना की तुम्हारे जीवन में स्वतन्त्रता की साधना सफल हो ही जाएगी। यह एक दीर्घ साधना है। तुम इसकी नींव के एक पत्थर-मात्र बन सकोगे। तुम्हारे त्याग, तप, बलिदान और सत्यनिष्ठ संघर्ष से जो स्वतंत्रता का भवन निर्माण होगा, उसकी अगामी प्रस्तर-पंक्ति में इन शिशु रामचंद्रराव [तात्या] जैसे अगामी व्यक्ति होंगें। "[4]

पहले भाग की कथावस्तु में स्वामी ज्ञानदास जी ने अपने भावपूर्ण उपदेश से बाजीराव पेशवा व्दितीय के मन में क्रान्ति की भावना निर्माण करने का प्रयास किया है।

[२]

दूसरे विभाग में स्वामी ज्ञानदास जी के उपदेश को लेकर बाजीराव पेशवा व्दितीय तथा उनकी पत्नी सरस्वतीबाई दोनों के बीच वाद-विवाद होता है। स्वामी ज्ञानदास जी का उपदेश बाजीराव जी गुप्त रखना चाहते हैं, किन्तु सरस्वतीबाई ने बाजीराव को विश्वास दिलाया कि किसी भी दशा में वह उनका कोई रहस्य किसी पर कभी प्रकट न करेंगी। इसपर बाजीराव ने एकांत में सरस्वतीबाई को स्वामीजी के साथ हुए अपने गुप्त वार्तालाप का पूर्ण विवरण बताया। स्वामी ज्ञानदास जी की प्रेरणा, उद्बोधन और मार्गदर्शन से बाजीराव क्रान्तिकारी संगठन में जुटे गए। साथ में उनकी पत्नी सरस्वतीबाई इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु संन्यासिनी का वेश धारण कर भारत भ्रमण करने निकल गईं।

प्रस्तुत भाग में उपन्यासकार ने पेशवा बाजीराव के मन में उत्पन्न स्वाधीनता की चिंगारी एवं उसे प्रोत्साहित करनेवाली सरस्वतीबाई का चित्रण है। पति के पथ की बाधा न बनकर प्रेरणा सहायक बनानेवाली सरस्वतीबाई नारी-जीवन के त्याग, समर्पण के पहलू को अभिव्यक्त करती है।

[३]

उपन्यास के तीसरे भाग में अँग्रेजों ने बाजीराव व्दितीय पेशवा को सत्ताच्युत करके पुणे से बिठूर जाने का आदेश देकर, उन्हें सिर्फ आठ लाख रुपये वार्षिक पेन्शन से जीवन निर्वाह के लिए देना स्वीकार किया। परिणाम स्वरूप बाजीराव सिर्फ " महाराज " नाम मात्र के रह गये।

बाजीराव को कोई पुत्रप्राप्ति नहीं हुई। उन्होंने एक निकट संबंधी के पुत्र धोंडोपंत को गोद ले लिया, उस पुत्र का लाड का नाम नाना साहब रखा गया। रामचंद्र पांडुरंग येवलेकर [तात्या टोपे] और मनुबाई [लक्ष्मीबाई] के पिता बाजीराव के आश्रित होने के कारण बच्चों का पालन-पोषण बाजीराव

की छत्रछाया में हुआ। तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई, नाना साहब के मन में छोटी अवस्थामें ही अंग्रेजों के प्रति तिरस्कार और स्वाधीनता के लिए मर-मिटने की भावना निर्माण हो गई थी।

बाजीराव पेशवा खुले आम क्रान्ति योजना में सम्मिलित नहीं हो सकते थे, किन्तु उन्होंने गुप्त रूप में व्यायामशालाएँ स्थापित की, जिसमें नवयुवक, युवतियोंको तात्या टोपे और लक्ष्मीबाई शारीरिक व्यायाम तथा सैनिकशिक्षा देने में अग्रसर थे।

बाजीराव के बिठुर के केन्द्र में गुप्त क्रान्तियोजना बनने लगी थी, इसी बीच बाजीराव के जीवन का अंत हो गया। अँग्रेजों ने नानासाहब को बिठुर की पेन्शन, जागीर एवं तत्संबंधी समस्त अधिकारों से पूर्णतया वंचित कर दिया। नानासाहबने अजीमुल्ला खाँ को साथ लेकर अँग्रेजों को अनेक प्रार्थना पत्र भेजे किन्तु अँग्रेजों ने नहीं माना। नानासाहब, अजीमुल्ला खाँ दोनों क्रान्तिसंगठन में जुट गए। इसी बीच तात्या टोपे को देश भर में सुसंगठित गुप्तचरसेना के निर्माण की अंत्यंत सुदृढ एवं व्यापक पृष्ठ भूमि प्राप्त हो गई।

[४]

उपन्यास के चौथे भाग में तात्या टोपे और लक्ष्मीबाई दोनों के बलिदान की कथा है। झाँसी के राजा गंगाधरराव विधुर थे और लक्ष्मीबाई से उम्र में अधिक बडे थे। किंतु लक्ष्मीबाई ने क्रांतिकारी देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर गंगाधरराव से विवाह करना पंसद किया। श्री मिलिन्द जी लिखते हैं - " लक्ष्मीबाई ने गंभीरतापूर्वक विचार किया था कि झाँसी के राजा से विवाह कर लेना स्वीकार कर लेने से वह झाँसी-राज्य का दुर्ग, सेना, शास्त्रास्त्र, कोष आदि स्वराज्यक्रांति यज्ञ के लिए प्राप्त कर सकेंगी। "[५] उसीतरह तात्या टोपे समर्थ सेनापति बनने योग्य होते हुए भी इस पद से उन्हें वंचित रखा गया। इस घटना का विवेचन इस अध्याय में अन्यत्र होने के कारण यहाँ केवल संकेत दिया है।

लक्ष्मीबाई आगे चलकर विधवा हो गयी तथा उनके दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी स्वीकार न करके झाँसी पर आक्रमण किया, जिसमें रानी लक्ष्मीबाई की पराजय हो गयी। रानी सेना समवेत कालपी में तात्या की सेना से जा मिली। क्रांति के नेता तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई, नानासाहब और उनके भाई रावसाहब, अजीमुल्ला खाँ आदि सब चाहते थे कि क्रांति की भावना पूरे देश

भर में व्यापक हो।

क्रान्ति के नेताओं ने लोगों को जगा के देशभर फिरकर अँग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना को प्रेरित किया। क्रांति नेताओं ने दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह जफर, अवध की बेगम हजरतमहल, बिहार के क्रांतिकारी नेता कुँवरसिंह आदि को लेकर दिल्ली में सबके व्दारा गुप्तमंत्रणा करके यह निश्चय किया कि तारीख ३१ मई, सन् १८५७ ई. के निश्चीत दिवस पर भारत भर में एक साथ क्रांति कर दी जाय।

बंगाल के बारकपुर में सैनिकोंने कारतूसों के अवरणोंको लगाये जानेवाले गाय तथा सूवरकी यरबी को दाँतों से तोडने से इन्कार किया। इससे असंतोष बढ गया और क्रांतिकारी मंगलपाण्डे ने संघर्ष का झण्डा खडा किया, जिससे अँग्रेजों ने मंगल पाण्डे को फाँसी दी। और क्रांतिभावना की ज्वाला सुलग गयी।

[५]

क्रांति कि तारीख निश्चित हो गयी थी। स्वराज्य क्रांति की पूर्व-निर्धारित तिथि के लगभग एक मास पूर्व ही यह विस्फोट हो जाने से सुव्यवस्थित एवं देशव्यापक क्रांति-योजना को क्षति पहुँची तथा अँग्रेज शासन पहले ही से अत्यंत सावधान हो गए। इस असमायिक विस्फोट के कारण तात्या को अत्यंत क्षोभ हुआ। उन्हें आत्मग्लानि और पश्चाताप भी हुआ। तथा इसी बीच क्रांतिकारियों ने दिल्ली पर अधिकार जमाया।

तात्या टोपे की पत्नी जानकीबाई अपने पति के निर्देशोंपर परिवार की सुरक्षा का भार वहनकर गृहस्थी की ओर से पति को निश्चिंत रखती रही। इससे तात्या क्रांति का दायित्वभार पत्नी पर न पडने देकर उसका वहन स्वयं करते हैं। उपन्यासकारने स्पष्ट किया है कि सन् १८५७ ई. के स्वाधीनता संग्राम में नारी का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। अपने पति को पारिवारिक समस्याओं से मुक्त रखकर जीवन-यापन करनेवाली नारी भी अपने आप में देशभक्त ही है। इस तथ्य को उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है।

उपन्यासकार के पत्नी की भूमिका भी सरस्वतीबाई [पेशवा बाजीराव की पत्नी] और जानकीबाई [तात्या टोपे की पत्नी] की तरह रही है। वह अपने पति के निर्देशापर राजनीति में सम्मिलित होकर महिला काँग्रेस का कार्य करती है।

[६]

दिल्ली की सफलता के बाद क्रांतिकारियों का विजय चक्र स्थान-स्थान पर तीव्र गति से चलने लगा। अनेक स्थानों पर क्रांति सैनिकोंने केंद्र बनाया। इस युध्द में तात्या टोपे की विशेषता यह थी कि, वे छापामार युध्दकला के साथ - साथ गुप्तचरवाहिनी का संगठन भी किया करते थे। उन्होंने अनेक राज्य को जोता इस महाक्रान्ति में सबसे अग्रज तात्या टोपे थे। इसका उल्लेख लक्ष्मीबाई तथा तात्या के वार्तालाप से मिलता है, - " लक्ष्मीबाई ने कहा - आप मेरे अग्रज हैं तथा स्वराज्यार्थ देश की महाक्रांति के वास्तविक प्रधान सेनापति भी हैं। मैं आपका अनुसरण करने में अपने जीवन की चरम सफलता समझूँगी। "[६]

[७]

सातवे अध्याय की कथा ३१ मई, १८५७ [स्वराज्यक्रांन्ति प्रारम्भ करने का दिन] से एक साल बाद की है। ३१ मई, १८५८ के दिन क्रान्तिकारियोंने ग्वालियरपर कब्जा कर लिया। रावसाहब के मन में झूठी शान के खातिर और स्वार्थ के कारण ग्वालियर का विधिवत शासक बनने की इच्छा प्रबल हो उठी। उन्होंने अपना राज्याभिषेक करवाया तथा उत्सवों एवं आयोजनों में इतना अधिक समय नष्ट कर डाला कि इस बीच अँग्रेजों ने अपनी शक्ति एवं साधन संपन्नता इतनी अधिक बढा ली कि क्रांतिकारियों को विजय असंभव हो गई। प्रस्तुत अध्याय के व्दारा उपन्यासकार ने भारतीय लोगोंकी झूठी शान, उत्सवप्रियता और भविष्य की योजनाओं की ओर गम्भीरता से न देखने की मानसिकता को प्रकाशित किया है। उपन्यासकार ने संकेत किया है कि रावसाहब उत्सव आयोजन में समय बरबाद न कर शक्ति संचय में करते तो १८५७ के स्वाधीनता आन्दोलन का अंत निश्चय ही अलग हो जाता।

[८]

ग्वालियर की पराजय के पश्चात् तात्या टोपे के जीवन की कहानी घोर कष्टों और संकटों से अविरत जूझने की रोमांचक कहानी बनी गई। तात्या टोपे की वीरता, साहस, धैर्य, कष्टसहिष्णुता, आशावादिता आदि का वर्णन यहाँपर वर्णित है। अँग्रेजों व्दारा क्रांतिकारियों पर ढाये जानेवाले अत्याचारों का वर्णन इसमें मिलता है।

[९]

ग्वालियर की असफलता से क्रांतिकारियों को बहुत आघात पहुँचा। इस समय तक तात्या टोपे के पास न विशाल सेना रह गई थी , न प्रचुर युध्दसामग्री तथा न प्रर्याप्त धन। अँग्रेज छाया की तरह तात्या टोपे के पीछे पड गये थे। तात्या टोपे भरतपुर, नसीराबाद, जयपुर, टोक, बुँदी, चंबल नदी, झालरापाटन, बेतवा नदी, राजगढ, होशांगाबाद, नर्मदा नदी, नागपुर, राजपुर, प्रतापगढ, आदि भागों में अँग्रेजों को चकमा देकर देवसा नामक स्थान आये। देवसा नामक स्थान पर तात्या टोपे , रावसाहब तथा फिरोजशाह से गंभीर मंत्रणा करके भविष्य के लिए योजना बना रहे थे, तब अँग्रेजों की सेना अचानक उनपर टूट पडी। किंतु तात्या वहाँसे राजस्थान में भाग गये।

तात्या टोपे एक वन्य स्थान पर अल्प समय के लिए विश्राम रहे थे, तब एक विश्वासघाती व्दारा सूचना दे दिए जाने के फलस्वरूप, विरोधी सैनिकों ने रात्रि में तात्या टोपे को निद्रित अवस्था में अचानक बंदी बना लिया।

[१०]

तात्या टोपे को बंदी बनाने के बाद उनपर मुकदमा चलाया गया। तात्या टोपे की ओर से कोई वकील प्रस्तुत नहीं हुआ। तात्या टोपे ने मुकदमें मे दिलचस्पी नहीं ली। मुकदमा एक ही पेशी में समाप्त कर तात्या टोपे को फाँसी का दंड दिया गया। तीन दिन बाद तात्या टोपे को फाँसी देने के लिए शिवपुरी के एक मैदान में लाया गया।

क्रांतिवीर तात्या टोपे अविचलित भाव तथा धीर-गंभीर गति से स्वयं ही फाँसी के तख्ते पर चढ गए तथा उन्होंने स्वयं ही प्रसन्नतापूर्वक फाँसी का फंदा अपने गले में डाल लिया। नीचे का तख्ता खीचं लिया गया और क्रांतिवीर तात्या टोपे प्रसन्नतापूर्वक अमर शहीद के पद पर प्रतिष्ठित हो गए।

[११]

उपन्यास के इस खण्ड में बाजीराव व्दितीय पेशवा की पत्नी सरस्वती-बाई और वीर तात्या टोपे की पत्नी जानकीबाई दोनोंका वार्तालाप है। जिसमें क्रांतिवीर तात्या टोपे के प्राणबलिदान का समाचार सुनकर सरस्वतीबाई जानकीबाई से मिलने आती है।

12951

सरस्वतीबाई अज्ञातवास में एक संन्यासिनी के रूप में रहते हुए भी प्रत्येक स्त्री तथा प्रत्येक पुरुष से यही अनुरोध करती थी कि जननी - जन्मभूमि की कर्ममय उपासना करें। सरस्वतीबाई जानकीबाई से अनुरोध करती है कि, तुम भी संन्यासिनी का वेश धारण करो।

[१२]

क्रांति की असफलता का अनेक क्रांतिकारियों ने अनुभव किया। उनकी समस्त युध्द सामग्री धीरे-धीरे उनके हाथ से निकल गई थी। इससे क्रांतिकारियों की अवस्था न घाट की न घर की हो गयी थी। वृध्द स्वामी ज्ञानदासजी को क्रांति की असफलता से अत्यंत वेदना हुई। अपने समस्त शेष जीवन को स्वामी ज्ञानदास ने जनता में स्वराज्य की स्थापना की आवश्यकता और मार्ग का प्रचार करने में लगा दिया। स्वामी ज्ञानदास चाहते थे कि उनके जीवनकाल ही में उनके स्वप्नों के जनतंत्र की नींव पड जाय किन्तु ऐसा नहीं हुआ।

" स्वराज्यक्रांतिसेना के भूतपूर्व सैनिक अपने नागरिक, कृषक या श्रमिक स्वरूप में स्वामी ज्ञानदास के प्रवचनों से विशेष प्रभावित होते थे और आशा करते थे कि आगामी पीढी देश में स्वराज्य की अवश्य स्थापना करेगी और उसे पूर्णतया न्यायनिष्ठ भी बनाने का प्रयास करेगी।

[अ] उपन्यास की कथावस्तु की विशेषताएँ :-

[१] क्रमबध्दता एवं सुगठन -

कथानक का क्रमबध्द एवं सुगठित होना उपन्यास की कलात्मक महत्ता को बढा देता है। उपन्यास का जो प्रभाव पडता है, उनके मूल में उसकी विभिन्न कहानियों की सम्बध्दता ही रहती है। कथा का चुनाव करने के पश्चात् उसमें घटनात्मक सम्बध्दता और घटनाक्रम का निर्धारण होना आवश्यक है।

मिलिन्द जी के " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास का कथानक क्रमबध्द तथा सुगठित है। इसमें मिलिन्दजी ने सन् १८५७-५८ ई. के बीच स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं तथा प्रमुख नायक के शौर्य व संगठन का वर्णन किया है। नायक के जीवन में आनेवाली अनेक घटनाएँ, युध्द आदि मिलिन्द जी ने बहुत खुबी से देने का प्रयास किया है।

[२] कुतूहल और रोचकता -

शिल्प की दृष्टि से उपन्यास के कथानक में कुतूहल का अपना महत्त्व है, क्योंकि यह कुतूहल उस रोचकता की सृष्टि करता है, जिससे पाठक को कथा-रस की प्राप्ति होती है। इसके लिए कथानक में रहस्य होना आवश्यक है, किन्तु बुध्दि को क्रियाहीन, अविश्वासनीय नहीं होनी चाहिए।

मिलिन्द जी का तात्या टोपे के जीवन पर आधारित " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास कथ्य और शिल्प की दृष्टि से रोचक है। इस कृति में इतिहास के पन्नों में दबे पडे तात्या का बहुमुखी व्यक्तित्व अपने समग्र रूप में पाठक के सामने स्पष्ट होता है। उपन्यास की सीधीसादी और प्रवाहपूर्ण भाषा के कारण पाठक एक पल के लिए भी इसे पढते समय उबन अनुभव नहीं करता।

उपन्यासकार ने नवीन तथ्यों को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत कर अपनी ऐतिहासिक सूझ-बूझ को अभिव्यक्त किया है। यह लेखक की अपनी मौलिकता है। सेनापति तात्या टोपे का जीवन लेखक ने रोचकता के साथ अंकित किया है। पाठक उपन्यास को प्रारम्भ से अंततक एक ही बैठक में पढने की कोशिश करता है। पाठक की यह कोशिश ही लेखक की सफलता है।

[३] प्रबन्ध - कौशल -

उपन्यासकार की प्रतिभा का परिचय उसके प्रबन्ध-कौशल से चल जाता है। उपन्यास का क्षेत्र विस्तृत होता है , जिससे उसमें अधिकारिक एवं प्रासंगिक कथाओं का समावेश होता है। इन कथाओंको किस प्रकार संगठित एवं सुयोजित किया गया है, इस पर उपन्यास का कलात्मक महत्त्व निर्भर होता है।

डा. जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द जी के इस उपन्यास के कथानक में प्रबन्ध पटुता सर्वत्र दिखाई पडती है। उपन्यास की प्रासंगिक कथाएँ अधिकारिक कथा से पूर्णतया सम्बध्द है, जिससे उपन्यास प्रबन्धात्मकता के गुणों से युक्त बन गया है।

[४] मौलिकता -

यह गुण उपन्यासकार की प्रतिभा का परिचायक है, क्योंकि किसी भी उपन्यास के कथानक में जितनी मौलिकता अथवा नवीनता होती है,

उसका महत्त्व भी उतना बढ जाता है। उपन्यासकार अपनी मौलिकता के आधार पर ही जीवन की गहराई को छुने का प्रयास करता है। मिलिन्द जी के " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में मौलिकता झलकती है। उन्होंने भारत में सन् १८५७ ई. की महान क्रांति के प्रधान सेनापति तात्या के जीवनगाथा को वर्णित किया है। इतिहास जैसे सूखे और नीरस विषय लेकर कथा लिखना तथा ग्वालियर से सम्बन्धित घटना-प्रसंगों का चित्रण मिलिन्द जी की मौलिकता मानी जाती है।

[५] घटनात्मक सत्यता -

उपन्यासकार जो कथानक प्रस्तुत करता है, वह प्राय: कल्पना की सहायता से निर्मित होता है। यदि वह किसी सत्य घटनापर भी आधारित हो, तब भी उसमें कल्पना का योग अनिवार्य रूप से होता है। किन्तु उसमें जीवन की सच्चाई का आधार भी होता है। मिलिन्द जी के उक्त उपन्यास में घटनात्मक सत्यता पर बल दिया है। यह वर्णनात्मक शैली में लिखा हुआ जीवनीपरक उपन्यास है। यह भारतीय स्वाधीनता के प्रथम संग्राम का एक ज्वलंत दस्तावेज है। उपन्यास में लेखक ने कल्पना का प्रणय बहुत कम लिया है। समग्र विवरण इतिहास-सम्मत है। इसमें स्वच्छ प्रांजल भाषा का प्रयोग किया गया है।

[६] भाषा की विशेषताएँ -

श्री मिलिन्द जी ने अपने उपन्यास में शुध्द परिनिष्ठित हिन्दी का प्रयोग किया है। सीधी सादी और प्रवाहपूर्ण भाषा प्रयोग के कारण पाठक उपन्यास पढते समय उब नहीं जाता। प्रभावी भाषा प्रयोग ने उपन्यास को स्तरीय बनाया है।

[७] पात्रों की मानसिकता -

उपन्यासकार अपने पात्रों की व्यक्त क्रिया-प्रतिक्रिया में चलनेवाले कारणों को देखता है। उनकी संवेदनाओं को जाँचने का कार्य करता है। उक्त उपन्यास के अंतर्गत मिलिन्दजी ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई गोद लेने के अधिकार से तथा नानासाहब अपनी पेन्शन से वंचित हो जाने के कारण आत्मपीडित हो गये। साथ-साथ कारतूसों के आवरण को अंग्रेजों की सेना में होनेवाले

भारतीय सैनिकोंने दाँतोंसे तोडना अस्वीकार किया। क्योंकि कारतूसों के विषय में यह अफवाहें फैल रही थी कि उनमें निषध्द चरबी लगी होती है। किन्तु अँग्रेज अधिकारियोंने भारतीय सैनिकपर ज्यादतियाँ कर दी जिससे सैनिकों की आत्मा तथा धार्मिकता को ठेस पहुँची। इस प्रकार के कारणं से सभी संघर्ष पर उतरें। ऐतिहासिक पात्रों की मानसिकता एवं मानसिक व्दव्दों का चित्रण उपन्यास की विशेषता है। गुलामी की भावना से उत्पन्न प्रतिक्रिया का परिणाम स्वाधीनता संग्राम है। अँग्रेजों के विरध्द दहकती ज्वाला का यह विस्फोट उपन्यास में प्रभावी रूपसे चित्रित है।

[८] भौगोलिक परिवेश -

प्रत्येक उपन्यास की कथा का आधार भौगोलिक परिवेश होता है। कभी यह परिवेश अपनी समग्र विशेषता के साथ आ जाता है तो कभी कथानक को गति देने के हेतु उपस्थित होता है। उपन्यास में भौगोलिक परिवेश को विशेष महत्त्व दिया जाता है। सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित क्रांतिवीर तात्या टोपे उपन्यास में क्रांति के प्रमुख केन्द्रों का उल्लेख है। बिठुर के नानासाहब, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई , दिल्ली के बहादुरशाह, अवध की हजरतमहल, बिहार के कुँवरसिंह, सातारा के छत्रपति आदि ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था। अंग्रेजों की अत्याचारी व्यवस्था को खत्म कर अंग्रेजो को भारत से खदेड देने के लिए देश के अनेक राजा, नवाब, सभी एक होकर विद्रोह का बिगुल बजाने लगे। प्रस्तुत उपन्यास में स्वाधीनता आन्दोलन के धटना स्थलों का वर्णन भौगोलिक परिवेश के रूप में आ गया है।

[९] जीवनानुभूति-

" क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में उपन्यासकार ने जीवनानुभुतिको अभिव्यक्त किया है। श्री मिलिन्द जी स्वयं सन् १९२० से १९४७ ई. तक भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के एक विनम्र सैनिक के रूप में कार्य करते रहे हैं। उनका जीवानुभव एवं अंग्रेज शासन के विरूध्द उत्पन्न मानसिकता उपन्यास लेखन की प्रेरणा रही है अपने जीवनानुभव से लेखक पाठक के मन में स्वाधीनता भावना जागृत करना एवं ऐतिहासिक महापुरूषों के प्रति सम्मान-आदर की भावना विकसित करना चाहते हैं।

(B) पात्र एवंचित्रण ::

कथा वस्तु को आकर्षक विश्वसनीय एवं रोचक बनाने के लिए पात्रों का संनियोजन उपन्यासकार की भारी क्षमता का द्योतक है। पात्र या चरित्र-चित्रण उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है। उपन्यास में इसका होना आवश्यक है। एक श्रेष्ठ उपन्यासकार मनुष्य के व्यक्तित्व के अनेका-नेक रूपों, गुणों एवं विशेषताओं को देखने-परखने का प्रयत्न करता है। पात्रों के साथ कथानक का मुख्य रूप से सीधा सम्बन्ध होता है। जो पात्र कथानक को गति देते हैं उससे विकास पाते हैं, उन्हे प्रधान या प्रमुख पात्र कहते हैं, जिन पात्रों का कथानक से सीधा सम्बन्ध न होकर उपन्यास में जो प्रधान पात्रों के साधन बनकर आते हैं उन्हें गौण पात्र कहा जाता है। "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास के पात्र जीवन्त एवं वास्तविक जीवन के ही हैं। पर इस उपन्यास में पात्रों की भीड अधिक नहीं है। इस उपन्यास में लगभग पात्र आ गये हैं। इन्हेकों प्रमुख, गौण आदि में विभाजित किया जाता है। तात्या टोपे, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बाजीराव पेशवा व्दितीय, स्वामी ज्ञानदास, सरस्वतीबाई, नानासाहब, बहादुरशाह जफर, कुंवरसिंह, अजीमुल्लाखाँ जानकीबाई आदि प्रमुख पात्र हैं तो मंगल पाण्डे, रावसाहब, ज्वाला प्रसाद, मौलवी अहमदुल्लाशाह आदि गौण पात्र।

(अ) चरित्र-चित्रण की प्रणालियाँ ::

चरित्र-चित्रण की तीन प्रणालियाँ हैं

(१) वर्णनात्मक प्रणाली ::

जिसमें उपन्यासकार अपने शब्दों में पात्रों की आकृति, वेशभूषा का वर्णन एवं मनस्थिति का चित्रण तथा उसमें व्यक्त होनेवाले हाव-भाव, क्रिया-प्रतिक्रिया का अंकन करता है।

(२) विश्लेषणात्मक प्रणाली ::

लेखक अपने पात्रों की व्यक्त क्रिया-प्रतिक्रियाओमें न अटका रहता है, और भावों- विचारों, उनकी सुक्ष्मातिसूक्ष्म सवेदनाओं के विश्लेषण व्दारा उनमें कार्य करण की शृंखला बैठाता है।

(3) नाटकीय प्रणाली ::

इसमें उपन्यासकार पात्र एवं पाठकों के बीच नहीं रहता, उन्हें स्वयं रंगमंच पर लाकर खुद बीच से निकल जाता है।

उपर्युक्त तीनों प्रणालियों में से एक या दो प्रणाली को उपन्यासकार अपनाता है और अपने पात्रों के चरित्र-चित्रण में सफलता प्राप्त करता है।

(3) चरित्र-चित्रण की विशेषताएँ ::

जहाँ कहीं भी पात्रों के चरित्रों में विकास अथवा परिवर्तन लाना होता है तब उपन्यास कार उसके लिए अनुकुल भूमि निर्मित करता है।

प्रस्तुत उपन्यास के प्रारंभ में समर्थ स्वामी रामदास के शिष्य स्वामी ज्ञानदास जी के अध्यात्म- चिन्तन में देशभक्ति का घूट देते हुए, "क्रांतिवीर तात्या टोपे" के यशस्वी जीवन की भावभूमिको जन्म दिया गया है। स्वामी ज्ञानदास जी की प्रेरणा, उदबोधन और मार्गदर्शन से बाजीराव पेशवा द्वितीय क्रांतिकारी संगठन में जुट गए हैं। आगे चलकर इस संगठन की बागडोर सम्हाली रामचंद्रराव (तात्या टोपे), मनुबाई, धोंडोपंत अर्थात नानासाहब पेशवा आदिने बहादुरशाह जफर, कुँवर सिंह, मंगल पाण्डे, अजीमुल्लाखाँ आदि का नाम भी इस संघर्ष में विशेष उल्लेखनीय रहा है।

मिलिन्द जी की इस कृति की एक विशेषता यह है कि तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई के राष्ट्रीय व्यक्तित्व के साथ-साथ दो महिला पात्रों का प्रभावपूर्ण राष्ट्रीय चरित्र उभर कर सामने आया है। ये दो प्रभावशाली नारी पात्र हैं- पेशवा बाजीराव की पत्नी सरस्वतीबाई और इस उपन्यास के नायक तात्या टोपे की पत्नी जानकीबाई। इन दोनों नारी पात्रों का त्याग, धैर्य और राष्ट्रीय भावना इन्हें मौलिकता की स्थिति तक ले जाती है। इस पूरी कथा को देखने से हमे पता चलता है कि प्रारंभ में एक कथा है और आगे उसी कथा का विकास होता हुआ दिखायी देता है।

[३] उपन्यास में चित्रित प्रमुख पात्र ::

ऐतिहासिक उपन्यास में प्रमुख पात्र के रूप में ऐतिहासिक पात्रों का उल्लेख किया जाता है।" क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास में तात्या टोपे ही नायक तथा प्रमुख पात्र है। इसका केन्द्रबिंदु है- रामचंद्र पाडुरंग येवलेकर, जो इतिहास में तात्या टोपे के नाम से मशहूर है। विदेशी सत्ता के खिलाफ सन् १८५७ ई. के संग्राम में एक देशभक्त बहादुर सेनापति के रूप में तात्या टोपे की क्रांतिकारिता इस कृति में चित्रित की है। तात्या टोपे के अन्तर्हृदयों और मुसीबतों के बीच उनके महान बलिदान को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

"क्रांन्तिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में पात्र कम है। प्रमुख और गौण तथा नारी पात्रों की संख्या १४ है। प्रस्तुत आलेख में हम प्रमुख पात्र, गौण पात्र एवं नारी पात्रों को देखने का प्रयास करेंगे।

प्रस्तुत ऐतिहासिक उपन्यास में मिलिन्द जी ने भारत में हुई सन १८५७-५८ ई की महान क्रांति के वास्तविक और व्यावहारिक प्रधान सेनापति वीर तात्या टोपे की जीवनगाथा को वर्णित किया है। यद्यपि अनेक पात्रों को लेखक ने उपन्यास के मंच पर प्रस्तुत किया है। किन्तु तात्या टोपे इस उपन्यास के प्रमुख पात्र है। लेखक ने कल्पना से तात्या टोपे के अतिरिक्त सरस्वतीबाई ,जानकीबाई, जैसे उज्वल नारी-पात्रों का सृजन किया है। तात्या टोपे और उनकी सहयोगिनी लक्ष्मीबाई दोनों का स्वतंत्रता संग्राम संघर्षमय जीवन को प्रस्तुत करने में लेखक सफल हुए है। इसे हमें चरित्र-चित्रण में देखना है।

[१] क्रान्तिवीर तात्या टोपे ::

[क] तात्या टोपे का जन्म तथा नामकरण ::

तात्या टोपे का असली नाम रामचंद्र पांडूरंग येवलेकर है। पांडूरंगराव पेशवा बाजीराव द्वितीय के विश्वासपात्र कर्मचारी थे। पांडूरंगराव के शिशु पुत्र रामचंद्रराव थे। यही रामचंद्रराव ही आगे चलकर तात्या टोपे कहलाए। उनका जन्म " १८१४ ई.में नासिक के पास जाबालि में एक ब्राम्हण परिवार में हुआ।" [७]

तात्या टोपे यह नाम उन्हें उपहार में मिला। इतली कहानी लेखक कहते है कि, "रामचंद्र के अनुज गंगाधर उन्हें आदरपूर्वक तात्या [बड़े भाई] कहा करते थे। धीरे -धीरे उनका यही संक्षिप्त नाम प्रचलित हो गया। उसी तरह एक बार रामचंद्रराव येवलेकर के एक अत्यंत साहस एवं वीरतापूर्ण कार्य से प्रसन्न होकर बाजीराव ने उन्हें एक रत्नजटित टोपी उपहार स्वरूप दी, जिससे वह टोपे कहलाने लगे। आगे चलकर रामचंद्र पांडुरंग येवलेकर "तात्या टोपे" के नाम से प्रसिध्द हुए और १८५७-५८ के स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने सेनापति का कार्य किया।" [८]

[ख] बचपन ::

बाजीराव व्दितीय पेशवा के यहाँ पांडुरंगराव आश्रित थे। बाजीराव व्दितीय पेशवा को पुत्र प्राप्ति न होनेसे उन्होंने अपने निकटवर्ती संबंधी के पुत्र को गोद ले लिया। जिसका नाम धोंडोपंत था, परंतु सभी प्यारसे उन्हे नानासाहब कहते थें। नानासाहब, तात्या और मनुबाई [लक्ष्मीबाई] ये तीनों बच्चे एक ही छत्रछाया में बड़े हो गए। मनुबाई के पिता भी अपनी पुत्री को साथ लेकर वाराणासी से बिठुर आकर बाजीराव के आश्रित बनकर रहने लगे थे। नानासाहब, उनके भाई रावसाहब, रामचंद्र और मनु सबको बाजीराव का प्यार -स्नेह मिला। बाजीराव पुत्रहीन होने के कारण उनके -हदय में सभी बालकों के प्रति वात्सल्य की अजस्त्र तथा विपुल धारा निरंतर प्रवाहित होती रहती थी।

तात्या बचपन से व्यायामशील थे। वे कुस्ती, मलखम्भ आदि जानते थे। वे शारीरिक व्यायाम तथा सैनिक शिक्षा भी जानते थे। आगामी स्वतंत्रता संग्राम में तात्या टोपे पुरुषों का और लक्ष्मीबाई महिलाओं का सफल नेतृत्व करने लगे। इन सब बालकों को व्यायाम के साथ सब प्रकार की सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी, उसमें भी लक्ष्मीबाई किसी से पीछे नही रहती थी। तात्या टोपे तो सबसे आगे रहते थे।

तात्या के बचपन का और एक किस्सा जो यहाँपर हमें मिलता है, वह यह है, " बचपन में ही तात्या अस्त्र- शास्त्रमें खेलना ज्यादा पसन्द करता था। उसमें शारीरिक सामर्थ्य भी कम न था। एक दिन एक भैंसा चिन्त अवस्थामें गांव के अन्दर घुस आया, ग्रामका कोई भी उसको पकड़ न सका।

किन्तु तात्याने खेल समझकर उसके दोनों सींग इस तरहसे पकड़ कर नवा दिये कि, फिर वह मैंसा किसी तरह भी अपना मस्तक उठा न सका और घसीटता हुआ जमीन पर गिर पड़ा।" [९] इसी तरह का साहसी बचपन तात्या का रहा है।

[ग] पारिवारिक जीवन ::

तात्या टोपे एक सामान्य परिवार में पैदा हुए। वे अपने हृदय में इस बात पर गौरव का अनुभव करते थे कि उनका जन्म किसी राजपरिवार में न होकर सामान्य परिवार में हुआ है। वे इस रूप में देश की सामान्य जनता के साथ सीधे एवं दृढतापूर्वक जुडे हुए थे।

तात्या टोपे की पत्नी का नाम जानकीबाई था। जानकीबाई अपने क्रांतिकारी पति पर गर्व महसूस करती थी। तात्या टोपे भी अपनी पत्नी को लक्ष्मीबाई तथा सरस्वतीबाई से कम नहीं समझते थे। क्योंकी जानकीबाईने परिवार की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी, इससे तात्या टोपे गृहस्थी की ओर से निश्चित थे। जानकीबाई चाहती थी की स्वतंत्रता संग्राम में भाग ले लु। लेकिन तात्या टोपे उन्हे अपने कर्तव्य का पालन करने को कहते हैं। तात्या जानकीबाईसे समझाते हैं, "परिवार के बालकों का पालन पोषण और बड़े -बुढों की सेवा शुश्रूषा कोई महत्वहीन कार्य नही है। यदि प्रत्येक परिवार का कम से कम एक ही व्यक्ति स्वराज्य की क्रांति के कार्य में अपने जीवन का प्रत्येक क्षण निरंतर एंव पूर्णतया अर्पित करने को तत्पर हो जाय और दूसरा व्यक्ति गृहस्थी का पूर्ण भार अपने ऊपर ले ले, तो, देश में स्वराज्य की स्थापना में अधिक समय नहीं लग सकता। तुमने यह बहुत बड़ा कर्तव्यपालन किया है कि परिवार के समस्त सदस्यों का भार अपने ऊपर ले लिया है। तुम्हारे कारण मैं देश के प्रति अपना कर्तव्य-पालन प्रत्येक क्षण पूर्ण रूप से कर रहा हूँ। यह तुम्हारा मुझपर बहुत बड़ा उपकार है। तुम्हारी बहुत बड़ी देश सेवा है। यदि तुम यह कर्तव्य पालन नहीं करती, तो मैं क्रांति के लिए अभीष्ट कार्य नही कर पाता।" [१०]

इससे तात्या टोपे के परिवार के साथ के संबंध किस प्रकार के थे इसका पता चलता है। तात्या किसी भी व्यक्ति को तथा कार्य को छोटा नहीं समझते थे। इसी लिए वे अपनी पत्नी को भी एक दृष्टि से क्रांति करनेवाली

ही समझकर पत्नी के कष्टसाध्य कार्य को क्रांति का योगदान मानते थे। तात्या अपनी पत्नी से कहते है, " वास्तविक महत्व तो जनता और सैनिको का हैं, नेताओ और सेनापतिओ का नही। केवल परिस्थितियों के कारण उन व्यक्तियो को नेता मानना पड रहा है, जिनके पास, भूतपूर्व राजपरिवारो में जन्म लेने के कारण, दुर्ग, सेना, शस्त्रास्त्र, धन आदि युध्द के साधन हैं। "[११] इससे यह पता चलता है कि तात्या अपनी पत्नी जानकीबाई एवं जनता तथा सैनिक का कार्य एक जैसा मानते थे। जानकीबाई का अपने परिवार के प्रति कर्तव्यपालन करना तात्या के नजर में एक युध्द तथा क्रांति ही थी।

घ) क्रांतिसंगठन :-

तात्या टोपे निष्काम कर्मयोगी थे। वे सबसे अधिक महत्व कर्तव्य-पालन को देते थे। उन्ही के निर्देशन में तत्कालिन क्रांतिकारी संगठित हुए। उनके जीवन से यही शिक्षा मिलती है कि सुविचारित योजनाए अंतत: सफल होती है। एक बार, रक्षाबंधन के दिन, मनुबाई (लक्ष्मीबाई) ने क्रांतियोजना के अपने सहयोगियो और सहयोगिनियों को एकत्रित करके उनसे कहा की क्रांतियोजना की व्रतधारिणियाँ व्रतधारी बंधुओ को राखी बाँधकर उनसे यह आशा करे की वे क्रांति के कर्तव्य के प्रति कार्य करे। तात्या टोपे उन सब में अग्रज (आगे) थे। इस अवसर पर तात्या के नेतृत्व में सब ने मिलकर दृढ संकल्प की शपथ ले ली। सबसे पहले पेशवा बाजीराव व्दितीय के कबिठुर के केंद्र में क्रांतियोजना को अँग्रेजो से चोरी छुपे शुरुआत की थी। इस क्रांतियोजना को तात्या ने आगे बढाए रखा। वे क्रांतिसंगठन का कार्य आगे बढने लगे।

तात्या सैन्य संगठित करने का प्रयत्न करते रहें। और सुविचारित योजना के अनुसार, देशभर के ऐसे समस्त राजाओं और नवाबों की ओर क्रांति के संदेश भेजे गए, जो अँग्रेजो की ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन से किसी न किसी कारण वश असंतुष्ट थे। तात्या टोपे आदि की यह योजना कुछ ही समय में सफलता की ओर अग्रसित हुई। कई भूतपूर्व शासकों ने क्रांति में भाग लेने के हेतु सहमति पत्र भेजा। जिसमें दिल्ली के बादशाह बाहदुरशाह जफर, अवध की बेगम हजरतमहल, बिहार के क्रांतिकारी

कुंवरासिंह आदि थे।

गुप्तचरयोजना तथा छापामार युध्द के विशेषज्ञ क्रांतिवीर तात्या टोपे ने देश भर में गुप्तचरवाहिनी का जाल विछा दिया। इसमें गायक, गायिकाएँ, उपदेशक साधु, साध्वियाँ, पंडित, मौलवी आदि भी सम्मिलित थे। क्रांति का संदेश घर-घर, गली-गली और -हदय में पहूँचने लगा। लोग अपनी जान पर खेलकर स्वराज्यक्रांति की पुकार करने लगे। अँग्रजी सेना के भारतीय सैनिकों में इस गुप्तचर वाहिनी के स्वयंसेवकों व्दारा देशभक्ति और क्रांतिभावना का प्रचार गुप्त रूप से होने लगा। क्रांति के संकेतचिन्ह भी प्रचारित होने लगे जो अत्यंत लोकप्रिय होने लगे। तात्या टोपे, अपने अनेक सहयोगियों के साथ, भारत भ्रमण के लिए बाहर निकले। नानासाहब के साथ तात्या टोपे लखनऊ से होकर कालपी गए, वहाँ उन्हें बिहार के क्रांतिनेता कुंवरसिंहजी मिले। तात्या काडनसे वार्तालाप हुआ। तात्या टोपे, नानासाहब, अजीमुल्लाखाँ आदि ने अथक परिश्रम करके देश-भर का वातावरण क्रांतिभावनापूर्ण बना दिया और सब लोग निश्चित तिथि की प्रतीक्षा करने लगे।

ड) स्वार्थ-त्याग तथा बलिदान की भावना :-

तात्या टोपे ने कभी भी पद के लिए कार्य नही किया। वे सिर्फ भारतमाता को आजाद करना चाहते थे। वे सिर्फ अँग्रेजों को भगाने के लिए क्रांतियोजना के पीछे लगे रहें। वे लक्ष्मीबाई की आत्मबलिदान भावना से प्रभावित हुए। लक्ष्मीबाईने झाँसी के राजा गंगाधरराव विधूर तथा उम्र से बढे होने के बावजूद भी उनसे विवाह किया था। उसका हेतु अँग्रेजों के विरूध्द संगठन बनाना था। लक्ष्मीबाई तात्या टोपे को अँग्रेज से भी अधिक सम्मान करती थी। लक्ष्मीबाई कहती है " आदरणीय तात्या, तुम जो आत्मबलिदान कर रहे हो, वह इससे भी बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। यह सब जानते हैं कि स्वराज्यक्रांति संग्राम के सबसे अधिक समर्थ सेनापति बनने योग्य तुम्हीं हो, किंतु, तुम जानबुझकर ऐसा वातावरण बनाते जा रहे हो कि सबसे अधिक गंभीर व्यक्तियों को दो। इससे अधिक स्वार्थत्याग तथा आत्मबलिदान और क्या हो सकता है। यह सभी जानते हैं कि क्रांति की सफलता के पश्चात सत्ता के सूत्र प्राय: उसी व्यक्ति के हाथों में आते है, जो सबसे अधिक योग्य और शक्तिशाली होता है। सबसे अधिक वीर,

साहसी और रणकुशल नेता होते हुए भी तुम कभी स्वप्न में भी भावी सत्ताधारी बनने की बात नहीं सोचते। इतना अधिक त्यागी व्यक्ति और कौन हो सकता है।"[12] इससे तात्या टोपे के त्यागी और आत्मबलिदानी व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। उन्होंने स्वार्थ के लिए कुछ भी कार्य नहीं किया था। वे सिर्फ साधारण जनता तथा भारत माता के सुपुत्र थे और इस लिए वे कार्य करते रहें।

अनेक क्रांतिकारी चाहते थे कि अधिक योग्य, साहसी, वीर और रणकुशल होने के कारण ही तात्या टोपे को ही क्रांतिकारी सेनाओं का प्रधान सेनापति नियुक्त किया जाए। और लक्ष्मीबाई को उपसेनानेत्री का पदभार सौंपा जाय। किन्तु ऐसा नही हुआ क्योंकी तात्या टोपे वीर, साहसी, और रणकुशल होकर भी वे सामान्य परिवार में पैदा हुए थे, इसी कारण उन्हें इस पद से वंचित कर यह पद नानासाहब को दिया क्योंकि वह उच्चकुलिन तथा पेशवा बाजीराव व्दितीय के उत्तराधिकारी थे। इसी निर्णय पर तात्या ने भी संदेह नही किया। इस आत्मबलिदान तथा त्या की भावना को देखकर लक्ष्मीबाई तात्या से कहती है " तुम्हारी योग्यता, साहस, वीरता और स्वकुशलनीति होने के कारण मैं और हमारे सभी क्रांतिकारी चाहते थे कि, तुम प्रधान सेनापति बने। लेकिन तुम स्वयं पीछे हटकर नानासाहब को प्रधान सेनापति बनने दिया। बहुत बडे त्यागी हो। तुम्हारे इस त्याग को देखकर मैने भी त्याग और बलिदान की भावना का सबक सिखा है।"[13] तात्या सिर्फ स्वराज्य स्थापना के लिए त्याग और बलिदान को ही सर्वोच्य पद मानते है। उनकी नगर में स्वराज्य प्राप्ति का अधिक महत्व है। उनकी दृष्टि में पद का कोई महत्व नही है। तात्या टोपे के इस स्वार्थत्याग को देखकर नाना-साहब भी गद्गद होते थे। वे स्वयं सर्वोच्य पद पर होते हुए भी तात्या को अपना सर्वोच्य सहाय्यक और परामर्शदाता बनाकर व्यावहारिक रुप में सच्या नेता तात्या टोपे को ही मानते है। नानासाहब तात्या की त्यागभावना को देखकर उनका आदर कर उनपर पूर्ण विश्वास रखते है।

आगे चलकर जब क्रांतिसंगठन में सेनापति तात्या होने पर मतभेद होते है। तात्या अपने संगठन में फूट न पडे इसलिए अपने पद का त्याग कर नानासाहब के भाई रावसाहब को सेनापति पद पर नियुक्त करते है। वे अपने स्वार्थत्याग तथा आत्मबलिदान की भावना से क्रांतिकारियों को

नेतृत्व के प्रश्न पर फूटने से बचा लेते हैं।

अंत में विरोधी सैनिक रात्रि में तात्या टोपे को निद्रित अवस्था में अचानक बंदी बना लेते हैं। वे विश्वासघात के शिकार बन जाते हैं। उन्हें फाँसी की सजा होती है। वे प्रसन्नतापूर्वक अमर शहीद के पद पर प्रतिष्ठित होते है। उनके इस आत्मबलिदान के बाद पेशवा बाजीराव द्वितीय की पत्नी सरस्वतीबाई ने जानकीबाई से कहा, " तात्या टोपे के बलिदान की सूचना मिलने पर भी मैंने अनुभव किया कि उनका बलिदान गर्व तथा गौरव का अनुभव करने योग्य है। उनके वियोग पर समवेदना व्यक्त करने जनता के पास जाना भी उतना ही व्यापक तथा कठिन कार्य है। किंतु, अब तक मेरी वेदना असहय हो चुकी है और मुझसे अब तुमसे मिले बिना नही रह गया है। "[१४] इसप्रकार तात्या का आत्मबलिदान तथा त्याग भारतवर्ष के इतिहास में शहीद तथा अमर बनकर रहा।

च) बागी व्यक्तित्व तथा क्रान्तिकारी :-

अंग्रजों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के द्वारा राज्य स्थापना की। भारतपर अंग्रेजों का प्रभाव तीव्र गतिसे बढने लगा। इस बढते प्रभाव को समाप्त करने की भावना छोटी अवस्था में तात्या टोपे के दिल-दिमाग पर हावी हो गई थी। यह असर उनके मनपर मरते दम तक रहा। तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई, नानासाहब, नानासाहब के भाई रावसाहब आदि सभी बच्चे एक ही छत्रसाया के नीचे पले हुए थे। इनकी वह महत्वपूर्ण छाया पेशवा बाजीराव द्वितीय थे। बाजीराव चाहने पर क्रांति में सक्रिय भाग न ले सके, किन्तु उन्होंने इन बच्चोंको प्रोत्साहित किया। क्रांति के नेता तात्या टोपे, अजीमुल्लाखाँ, लक्ष्मीबाई, नानासाहब, नानासाहब के अनुज रावसाहब आदि ने क्रांति की भावना का व्यापक संगठन देशभर शीघ्रसे शीघ्र पूर्ण किया और क्रांति यंत्रणा रची गयी। दिल्ली में सबके द्वारा गुप्तमंत्रणा करके यह निश्चय किया गया कि तारीख ३१ मई, सन १८५७ ई. के निश्चित दिवस पर भारत भर में सभी स्थानों पर एक ही समय बगावत की जाए तथा अंग्रेज साम्राज्य को खदेड दिया जाए।

जब क्रांति की योजना तथा दिन तय हो गया। उन्ही दिनों बारकपुर के क्रांतिनिष्ठ वीर सैनिक मंगल पांडे को गिरफतार किया गया और मंगल पांडे को फाँसी दी गयी। मंगल पांडे की फाँसी क्रांति के

विस्फोट का प्रथम कारण बन गई जिसकी चरम परिणाति क्रांति के प्रधान सेनापति तात्या टोपे की फाँसी में हुई। मंगल पाडे की प्राणाहुति ने अंग्रजो की सेना में होनेवाली भारतीय सैनिकों में क्रांति की भावना की ज्वाला सुलगा दी।

पूर्वनिर्धारित तिथि के एक मास पूर्व ही क्रांति का विस्फोट होनेसे अंग्रेज सावधान हो गए। किन्तु तात्या ने आगे ही बढने का प्रयास किया। तात्या टोपे तथा क्रांतिकारियोंने सबसे पहले दिल्लीपर अधिकार कर लिया। तात्या चाहते थे कि ईस्ट इंडिया कम्पनी को खत्म करके पूरे भारत देश-पर भारत वासियों का स्वराज्य स्थापित हो। दिल्ली की सफलता के बाद क्रांतिकारियों का विजय चक्र स्थान-स्थान पर तीव्र गति से चलने लगा। अलीगढ, मैनपुरी, इटावा, नसीराबाद, बरेली, शाहजहाँपूर, मुरादाबाद, लखनऊ, बदायु, आजमगढ, सीतापुर, कानपुर, इलाहाबाद, झाँसी, फैजाबाद, सुलतानपुर, जालंधर बस्ती आदि पर क्रांतिकारियों ने अधिकार कर दिया।

उत्तर हिंदुस्थान में कालपी, कानपुर, ग्वाल्हेर की क्रांति में तात्या टोपे ही आगे थे। ग्वाल्हेर में उन्हे असफलता मिली फिरभी वे डगमगाये नहीं। उन्होंने फिरसे सैनिकों को जमा किया और अंग्रेजोंपर टूट पडे। उन्होंने अंग्रेजों को बहुत ही हैराण किया था। तात्या धीरे-धीरे दक्षिण की ओर प्रस्थान करते रहें। इसी दरम्यान वे अंग्रेजों का बहुत ही नीडरता से मुकाबला करते रहें। आखिर एक दिन विश्वासघात से उनको आधी रात अंग्रेजोने पकड लिया। ८ अप्रैल १८५९ को उनकी जबानी ली गयी तब उन्होंने कहा कि " मैंने किसी प्रकार का विद्रोह नहीं किया है। मैंने केवल अपने कर्तव्य का पालन किया है। अपनी मातामाही को दासता के बन्धनो से मुक्ति दिलाने के लिए प्रयत्न करना कोई अपराध नही है। "[१५] १८ अप्रैल, १८५९ के दिन उन्हे शाम के समय फाँसी दी गयी।

छ) धैर्यशील तथा साहसी वीर :-

तात्या बचपन से ही नीडर तथा साहसी वीर थे यह हम देख चुके है। वे साहसी, वीर तथा रणकौशल में माहिर थे। उन्होंने अपनी भारतमाता के लिए अपनी जान की भी पर्वा नहीं की। साहसी वीर होने के कारण तात्या स्वतंत्रतासंग्राम में कुद पडे थे। उन्होंने उत्तर हिंदुस्थान में

कालपी, कानपुर, ग्वाल्हेर को जीतकर आगे बढना शुरु किया था। आगे समथर पहुँचे समथर होते हुए जयपुर पहुँचे, जयपुर से टोंक पहुँचे सभी ओर से सहाय्यता माँगी। जहाँ से भी मिली ले ली। किसी से छीनकर तो किसी से युध्द -कर तात्याने दुबारा अपनी सेना विशाल बनाई। धन, यंत्रसामग्री प्राप्त कर फिरसे क्रांति की योजना बनाने में जुटे जनता की सहानभूति तात्या के साथ थी। तात्या की सेना चंबल झालरापाटन से बेतवा नदी पार कर ललीतपुर, ललीतपुर से राजगढ पहुँची मार्ग में विशाल सेना और यंत्रसामग्री लेकर नर्मदा पार की ओर वहाँसे देवगढ, प्रतापगढ, देवसा, राजस्थान और आखिर कार वन्य क्षेत्र में आ गए।

लगभग एक वर्ष तक अँग्रेजों की समस्त सेना तात्या के कौशाल्य, वीरता, धैर्य, साहस तथा सूझबुझ के कारण अत्याधिक परेशान थी। तात्या की सैनिकसंख्या तथा युध्द सामग्री के परिमाण की दृष्टि से अधिक होते हुए भी वीरता, साहस, धैर्य तथा कौशाल्य में अँग्रेजों की सेना तात्या की सेना से पिछड जाती थी। लेकिन विश्वासघात के कारण तात्या पकडे गए। उन्हे फाँसी की सजा दी गई।

"क्रांतिवीर तात्या टोपे" अविचलीत भाव तथा धीर-गंभीर गतिसे स्वयं ही फाँसी के तख्तेपर चढ गए। उन्होने स्वयं ही प्रसन्नतापूर्वक फाँसी का फंदा अपने गले में डाल दिया। नीचे का तख्ता खींच लिया गया और क्रांतिवीर तात्या टोपे प्रसन्नतापूर्वक अमर शहीद के पद पर प्रतिष्ठित हो गए।"[१६] इससे बडी वीरता, साहस तथा धैर्य कौनसा है ?

[ज] <u>कुशल क्रान्तिकारी एवं श्रेष्ठ योध्दा :-</u>

तात्या टोपे बुध्दि से बहुत ही चतुर थे। उन्होंने बचपन से क्रांति को बहुत करीब से देखा था। पुणे के पेशवा बाजीराव व्दितीय के चाहने पर भी स्वयं क्रांति में खुले आम भाग नहीं ले सके। अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बाजीराव ने तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई, नानासाहब रावसाहब आदि को स्वतंत्रता संग्राम क्रांति के लिए शिक्षा दी।

बुध्दि तथा विद्या के विकास के अधिक से अधिक साधन क्रांतिनेता तात्या को प्राप्त थे। तात्या नवयुवक को शारीरिक व्यायाम और सैनिक शिक्षा देकर युध्द के लिए तयार करते थे। वे पदलोलुप तथा धनलोलुप नहीं थे। तात्या की एक और विशेषता यह थी कि,

वे गंभीर खतरे उठाने में और अधिकतम उत्तरदायित्व वहन करने में सबसे आगे रहते थे । तात्या की बुध्दि कितनी तत्पर तथा विवेकी थी इसका उदाहरण मिलता है, जब तात्या और लक्ष्मीबाई के संवाद चलते हैं तो तात्या लक्ष्मीबाई से कहते हैं, - मैंने नानासाहब और रावसाहब के प्रोत्साहन और आज्ञा से इन सब बातों का ध्यान रखा है और आपकी भी आज्ञा मिली, पूरा ध्यान दूंगा । मैं इतने महीने पैदल अधिक फिरा हूँ इसलिए मुझको देश का भूगोल बहुत अच्छी तरह याद हो गया है । किसी न किसी तरह बहुत से आदमी, सामान और जानवर लेकर कहीं का कहीं पहुँच सकता हूं ।" [७] तात्या पराजित होने पर निराश न होकर अपना मनोबल हमेशा बढाते थे ।

[ब] छापामार योध्दा :-

" क्रांतिवीर तात्या टोपे की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि वे छापामार युध्द करते थे । इतिहास में कम क्रांतिवीरों ने ऐसा युध्द किया है । छापामार युध्द में शिवाजी महाराज एक मात्र माहिर थे, आगे चलकर तात्या ने उसी कला को अपनाया । छापामार युध्द को मराठी में बहुत अच्छा नाम है, " गनिमी कावा पध्दत " । तात्या छापमार युध्द में बहुत निपुण थे, इसीके कारण उन्होंने बहुत सारे युध्दों में जीत हासिल की थी । जब अंग्रेज सरकार तात्या तथा तात्या के क्रांतिकारियोंके प्रति निश्चिंत रहते थे तो ऐसे समय में ही तात्या सतर्क न होनेवाले अंग्रेजों पर धावा बोल देते थे । इससे अंग्रेज बहुत घायल - चिंतित हो गए थे । उन्हे इस कला से युध्द में सफलता मिली थी । तात्या अपने अंतिम समय तक इस प्रकार से युध्द करते रहें ।

[क] गुप्तचर योजना का सूत्रधार :-

छापामार युध्दकला के साथ-साथ तात्या की और एक महत्वपूर्ण विशेषता थी गुप्तचरवाहिनी का संगठन । तात्या के गुप्तचरवाहिनीमें गायक, गायिकाएँ, उपदेशक, साधु, साध्वियाँ, पंडित मौलवी आदि लोग सम्मिलित थें । गुप्तचरवाहिनी के कारण अंग्रजों की प्रत्येक गतिविधि की सूचना क्रांतिकारियों तथा तात्या को मिलने लगी । गुप्त क्रांतिकेन्द्र बनाए गए क्रांति केगुप्त संकेत चिन्ह बनाए गए। दिल्ली में सबके द्वारा गुप्तमंत्रणा

करके यह निश्चय किया गया कि तारीख ३१ मई, सन् १८५७ ई.के निश्चित दिवस पर भारत भर में सभी स्थानों पर क्रांती होकर रहेगी। इस गुप्तमंत्रणा में तात्या अग्रज थे। तात्या स्वयं छद्म रूप से अंग्रेजों की सेना से युध्द करते रहे। उन्होंने हमेशा छापामार युध्द तथा गुप्तचरयोजना से अंग्रजों को त्रस्त किया था।

[ह] स्नेहशील व्यक्तित्व :-

तात्या टोपे साहसी, वीर तथा धैर्यशील होने के बावजूद दूसरों के प्रति स्नेह रखते थे। वे साधारण सैनिकों पर हमेशा ध्यान दिया करते थे। इसका उदाहरण हमें यहाँपर मिलता है, -" अपने साथ के साधारण सैनिकों की सुविधा का तात्या टोपे इतना ध्यान रखते थे कि सब को खिलाने के बाद स्वयं कुछ खाते थे। स्वराज्यक्रांति के शत्रुओं के समर्थों को से वे द्रेशद्रोह के दंड के रूप में, कुछ न कुछ धन प्राप्तकरते थे और उसे तत्काल स्वराज्य क्रांति की सेना के सैनिकों मे यथोचितरूप में बाँट देते थे।"[१८] यहाँपर तात्या की दूसरों के प्रति स्नेहभावना दिखायी देती है।

तात्या अपने गृहस्थी से भी स्नेह रखते थे। वे सामान्य जनता के बहुत ही करीब थे। स्वयं लेखक लिखते हैं, " तात्या टोपे अपने -हृदय में इस बातपर गौरव का अनुभव करते थे कि उनका जन्म किसी राजपरिवार में न होकर सामान्य परिवार में हुआ है और वह इस रूप में देश की सामान्य जनता के साथ सीधे एवं दृढता पूर्वक जुडे हुए हैं।"[१९] तात्या रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब, रावसाहब इनके साथ भी स्नेह से रहते थे। इससे उनकी दूसरों के प्रति स्नेहभावना दिखायी देती है।

[ठ] अंत :-

तात्या ने क्रांतिसंगठन कर सन १८५७ की क्रांतियोजना की। किन्तु असमय क्रान्तिविस्फोट होने से योजना पर पानी फिर गया। तात्या नेहार नहीं मानी। वे राज्य-राज्य तथा वन-वन घूमकर सेना और युध्दसामग्री जमा करके अंग्रेजों पर अचानक आक्रमण करते थे। जिससे अंग्रेज त्रस्त हो गये थे। लेकिन इसी बीच जब तात्या एक वन में विश्राम कर रहे थे तब विरोधी सैनिकों ने विश्वासघात से उन्हे निद्रित अवस्था में बंदी बनाया। फिर मुकदमें की पेशीमें तात्या को फाँसी की सजा सुनायी गयी।

तात्या ने स्वयं फैसला किया की फाँसी के वक्त किसी को हाथ न लगाने दिया जाय। उन्होने स्वयं अपने हाथों फाँसी का फंदा गले का हार समझकर डाल लिया और हमेशा के लिए वे दुनिया से विदा हुए। क्रान्तिवीर तात्या टोपे अमर शहीद हो गए।

निष्कर्ष :-

डॉ. जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द कृत "क्रान्तिवीर तात्या टोपे " उपन्यास का केन्द्रबिंदु है - रामचंद्र पांडुरंग येवलेकर, जो इतिहास में तात्या टोपे नाम से मशहूर है। विदेशी सत्ता के खिलाफ सन् १८५७ ई. के. संग्राम में एक देशभक्त वीर सेनापति के रूप में तात्या टोपे की क्रांतिकारिता इस कृति में चित्रित की गई है। तात्या टोपे के अन्तर्द्वन्द्वों और मुसीबातों के बीच उनके महान बलिदान को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करने में मिलिन्द जी सफल रहे हैं।

तात्या टोपे के जीवन पर आधारित यह उपन्यास चरित्र-चित्रण की दृष्टि से श्रेष्ठ है। इस उपन्यास में तात्या का स्वाभिमान, जनतंत्र में आस्था, अध्ययनशीलता, राष्ट्रप्रेम, युध्दकुशलता आदि कुछ ऐसे गुण हैं, जिन्होने न केवल तात्या के चरित्र को अनुकरणीय बनाया, बल्कि उसे अमर भी बना दिया है। इस उपन्यास के माध्यम से देश की युवा पीढी भारत के स्वाधीनता संग्राम में होम हुए इस महान योध्दा से परिचित होती है।

(२) स्वामी ज्ञानदास :-

संत समर्थ रामदास स्वामी के शिष्य स्वामी ज्ञानदास है। उपन्यास के आरम्भ ही में स्वामी ज्ञानदास जी आते हैं। ईस्ट इंडिया कंपनी के नाम पर व्यापार करने वाले अँग्रेज जब इस देश (भारत) की राजनीति में छल-छद्म से प्रविष्ट हो गए, समूचा भारत परतंत्रीय पाश में फँस जाने जैसे भयानक मोड पर आ गया। ऐसी विषय घडी में "संतों" के रूप में स्वामी ज्ञानदास जी अपने अध्यात्मिक चिन्तन से देशभक्ति की विचारधारा लेकर सामने आये। उन्होने अपने देश को अँग्रजों के हाथोंसेबचाने के लिए बाजीराव पेशवा व्दितीय को बुलवाया।

स्वामी ज्ञानदासजीने आपने आश्रम में उपस्थित पेशवा बाजीराव

व्दितीय तथा पांडुरंगराव और उनके पुत्र रामचंद्रराव (भावी तात्या टोपे) को अँग्रेजों की कुटिल राजनीति के बारे में एवं अँग्रेजों के दुष्ट विचारोंको सामने रखा और बाजीराव को अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक किया।

अपने समस्त शेष जीवन को स्वामी ज्ञानदास जी ने जनता में स्वराज्य की स्थापना की आवश्यकता और मार्ग का प्रचार करने में लगा दिया। इस उपन्यास के अन्त में स्वामी ज्ञानदास का दर्शन श्री मिलिन्द जी ने कराया है, जब के स्वामी जीवन की आंतिम आवस्था में रहें हैं।

विशेषताएँ :-

श्री मिलिन्द जी ने स्वामी ज्ञानदास जी को अध्यात्मिक चिन्तनशील रुप में प्रस्तुत किया है। सन् १८५७ ई. के. स्वतन्त्रता संग्राम के बीज तथा अँग्रजों के प्रति विद्रोह की भावना जनता में जागृत करने का प्रयास स्वामी ज्ञानदासजी ने किया। स्वामी ज्ञानदास की यह विशेषता रही कि, उन्होने आंदोलनकारियों में शक्ति पैदा की। उन्होने संपूर्ण महाराष्ट्र में घूम-घूमकर स्वतन्त्रता का शंख फूंका और पेशावा बाजीराव व्दितीय को भारतपर सत्ता स्थापित करनेवाले अँग्रेजों के प्रति विद्रोह करने की चेतावनी दी। स्वामी ज्ञानदास जी ने विद्रोह करने के लिए हर तरह की मदद की। यह इस पात्र के चरित्र की एक विशेषता मानी जायेगी।

लेखक स्पष्ट करते हैं कि भारत की आध्यात्मिक शक्ति राजनीति और समाज परिवर्तन की क्षमता रखती है। यह शक्ति समाज को कार्यप्रवण कर दिशा निर्देश कर सकती है। इस शक्ति का लाभ प्राप्त करने की योजना नेताओं और समाज सुधारकों की व्दारा बनाना आवश्यक है।

(३) बाजीराव पेशावा व्दितीय :-

उपन्यास के प्रमुख पात्रों में बाजीराव पेशावा व्दितीय है। अँग्रेजों का शासन जब भारत में स्थापित हुआ, तब महाराष्ट्र में पेशावा का राज्य था। अन्तिम पेशावा बाजीराव के हाथों में शासन की बागडोर थी। फलत : अँग्रेजों ने उसे बुझा डालने का संकल्प किया। इसी बीच स्वामी ज्ञानदास जी के आश्रम में बाजीराव पेशावा व्दितीय जाया करते थे। स्वामी ज्ञानदास अँग्रेजों की साम्राज्य लिप्सा की वृति को देख चिंतीत थे। उन्होंने बाजीराव

पेशवा को अपने राष्ट्र तथा पूरे भारतवर्ष के प्रति उनका क्या कर्तव्य है यह बताकर उन्हे कर्तव्य के प्रति जागरूक किया ।

बाजीराव पेशवा को अँग्रेज अधिकारियों ने विवश कर दिया कि वह दक्षिण का अपना राज्य छोडकर उत्तर भारत के बिठूर में अँग्रेजों के वृतिभोगी बनकर रहें। इस अपमान के कारण बाजीराव पेशवा गुप्त मंत्रणा करते हुए सन १८५७ ई. के क्रांति में सम्मिलित हो गए। उन्होंने तात्या टोपे, नानासाहब, रावसाहब, राणी लक्ष्मीबाई आदि को क्रांति के लिए प्रशिक्षण दिया। उन्होंने व्यायामशालाएँ बनायी तथा स्वामी ज्ञानदास जी के समक्ष तपस्या और क्रांतिसंगठन की प्रतिज्ञा की।

विशेषताएँ :-

लेखक ने बाजीराव पेशवा का चित्रण एक निर्वासित और निराश व्यक्ति के रूप में किया है। लेखक ने यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य बताया है कि, जब कोई व्यक्ति स्वयं कोई महत्व पूर्ण कार्य करने के योग्य नहीं रह जाता, तब उसमें उपदेशक की वृति जागृत हो जाती है। उसी तरह बाजीराव की यही दशा हुई है। बाजीराव पेशवा की यह विशेषता है कि, उन्होंने स्वामी ज्ञानदास से जो उपदेश प्राप्त किया था, उसे उसने पूर्ण रूपेण अपने निकट की नई पीढी को सौंपकर स्थान-स्थान पर व्यायाम-शालाएँ स्थापित कर नई पीढी के नवयुवकों के लिए शारीरिक शक्ति तथा स्वास्थ्य के विकास के साधन उपलब्ध कराए।

(४) नानासाहब :-

इस उपन्यास के चौथे पात्र सन् १८५७ के स्वतन्त्र संग्राम के वीर सेनानी नानासाहब है। पेशवा बाजीराव ने १८२७ ई. में नानासाहब को अपना दत्तकपुत्र स्वीकार किया था। उस समय नानासाहब की आयु कुल तीन वर्ष की थी। " नानासाहब का जन्म पुना के पास एक गाँव में १८२४ ई. के जून मास में हुआ था।"[१२०]

बाजीराव मृत्यु के पूर्व ब्रिटिश शासनाधिकारियों को लिखकर दे गए थे कि उनकी मृत्यु के पश्चात नानासाहब को उनके दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार किया जाय और आठ लाख रुपये वार्षिक पेन्शन उन्हीं को दी जाय। पर अँग्रेज शासनाधिकारियों ने उनके मरने पर उनकी बात को मानने से

अस्वीकार कर दिया। उन्होंने यह कहकर पेन्शन बन्द कर दी कि, नानासाहब के पास जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त सम्पत्ति है। जब कम्पनी सरकार ने नानासाहब को पेशवा पद से वंचित किया तब नानासाहब ने अपने मित्र अजीमुल्लाखाँ को पुन: पेशवाई पद प्राप्त करने के लिए विलायत भेजा, किन्तु सफलता न मिलने पर उन्होंने अँग्रजों के विरुध्द विद्रोह कर दिया। पहले नानासाहब का विद्रोही दृष्टिकोण अपने निजी अधिकारों एवं सम्मान तक ही सीमित था किन्तु बाद में वह व्यापक हो गया और उन्होंने समस्त भारत को अँग्रेजों के चंगुल से मुक्त कराने के लिए युध्द की घोषणा कर दी तथा अन्त तक लडते रहें।

विशेषताएँ :-

लेखक ने इस पात्र को असफलता के कारण विद्रोह में भाग लेनेवाले के रूप में चित्रित किया है। नानासाहब, बाजीराव पेशवा द्वितीय के दत्तक थे, किन्तु नानासाहब को बिठूर की पेन्शन, बिठूर की जागीर एवं तत्संबंधी समस्त अधिकारों से पूर्णतया वंचित कर दिया गया। यही कारण था कि, इस पात्र ने अँग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया। इससे यह पता चलता है कि इस पात्र का चित्रण करते समय लेखक के पात्र के मन में बदले की भावना दिखायी देती है। प्रतिशोध की भावना से उत्पन्न मानसिकता का प्रभावी चित्रण उपन्यासकार ने नानासाहब के चरित्र द्वारा किया है।

प्रस्तुत पात्र ऐतिहासिक है। उपन्यासकार ने उससे सम्बधित प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं को केवल चुना है।

नानासाहब के चरित्र चित्रण से उपन्यास की विषयवस्तु के प्रभाव वृध्दि में सहायता मिली है।

प्रस्तुत चित्रण प्रभावी वास्तव एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे सफल सिध्द होता है।

(५) अजीमुल्ला खाँ :-

आलोच्य उपन्यास में अजीमुल्ला खाँ का नाम भी उल्लेखनीय है। सन् १८५७-५८ ई. के क्रांति के प्रमुख क्रांतिकारी के नाम से जाने जाते हैं। इंग्लैंड जाकर अजीमुल्ला खाँ ने नानासाहब की अपील की पैरवी की। किन्तु उन्हे असफलता मिली। अजीमुल्ला खाँ के साथ दक्षिण के छत्रपति प्रतापसिंहजी के प्रतिनिधि रंगो बापूजी भी पदच्युत छत्रपति को न्याय दिलाने इंग्लैड गये थे।

इन दोनों को असफलता मिलने के कारण अजीमुल्ला खाँ तथा रंगो बापूजी ने मिलकर यह निश्चय किया कि भारत पहुँचकर वे दोनों अँग्रेजी शासन के विरुध्द क्रांति का संगठन करने में अधिकतम सहयोग देंगे। यदयपि अजीमुल्ला खाँ ने अन्यन्य सेना-नायकों के भाँति हाथों में तलवार ग्रहण नहीं कि थी पर उन्होने देशभर घूम-घूमकर एकता स्थापित की थी। उन्होने युध्द के लिए व्यूह रचना की थी। अपने बुध्दिचातुर्य और संगठन शक्ति के कारण वे अमर बन गए।

विशेषताएँ :-

यही पात्र एक प्रेरक क्रांतिकारी के रूप में इस उपन्यास में आया है। उपन्यासकार इस पात्र की विशेषता बताने में सफल हो गये हैं, किन्तु यह पात्र उपन्यास बीच में ही गायब हो गया है। बुध्दिमान और कानून के जानकार तथा विदेशों की समस्त जानकारी इस पात्रको मालूम थी। उसने सर्वप्रथम क्रांतिसंगठन की प्रेरणा देकर देश भर में क्रांति संगठन के लिए अथक भ्रमण और प्रयत्न किया।

(६) बहादुरशाह जफर :-

" क्रान्तिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में महत्वपूर्ण घटना सन १८५७-५८ ई. की महाक्रांति है, जिसमें दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह जफर का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिलिन्द जी ने उपन्यास में प्रमुख पात्र के रूपमें बहादुरशाह जफर को चित्रित किया है।

दिल्ली में बहादुरशाह जफर की उपस्थित में सभी ने गुप्तमंत्रणा करके यह निश्चय किया कि तारीख ३१ मई, सन् १८५७ ई. के निश्चित दिवस पर भारत भर में सब स्थानों पर एक साथ क्रांति कर दी जाय। किन्तु क्रांति विस्फोट निश्चित समय से पहले हो गया। भूतपूर्व सम्राट बाहदुरशाह जफर निर्धारित तिथि के पूर्व क्रांति का आरम्भ किए जाने के विरुध्द थे, किन्तु क्रांतिकारियों ने उन्हे विवश कर दिया कि वे उनका नेतृत्व करें।

विशेषताएँ :-

बहादुरशाह जफर की विशेषता यह है कि वे दूरदर्शी थे अतः उन्होने क्रान्तिकारियों व्दारा निर्धारित विधि के पूर्व क्रांति का आरम्भ किए जाने का विरोध किया था। इस पात्र का सफल चित्रण उपन्यासकार

ने किया है।

(ख) गौण पात्र :-

"क्रान्तिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में प्रमुख पुरुष पात्रों के साथ गौण पुरुष पात्र भी आ गये हैं। जिन पात्रों का महत्व कम होता है और वे मुख्य कथा के विकास में सहाय्यक होते हैं उन्हे गौण पात्र कहते हैं। आलोच्य उपन्यास के गौण पात्र इस प्रकार है --

(१) रावसाहब :-

नानासाहब के अनुज रावसाहब ने भी क्रांति में विशेष उल्लेखनीय कार्य किया था। जिसका उल्लेख उपन्यास में हुआ है। उपन्यासकार ने रावसाहब के बचपन का चित्रण करते हुए भाई-भाई के प्यार को दिखाया है। रावसाहब के मनमें बचपन से स्वाधीनता की चिंगारी प्रज्वलित हो गई थी जिसका विस्फोट सन् १८५७ ई. के आन्दोलन में दिखाई देता है।

(२) कुंवरसिंह :-

बिहार के क्रांतिकारी कुंवरसिंह क्रांति में सम्मिलित हो गये थे। तात्या टोपे, नानासाहब कालपी पहुँचे वहाँपर उन्होने बिहार के क्रांतिनेता कुंवरसिंह से मंत्रणा कर रणनीति बनाई। कुंवरसिंह एक श्रेष्ठ योध्दा और संघटक थे। उन्होने बिहार में अपना अलग संगठन बनाकर अँग्रेजों के विरुध्द बगावत का झेंडा फहराया था। वे तात्या टोपे, नानासाहब के आग्रह-सूचना के अनुसार १८५७ ई. के स्वाधीनता आन्दोलन में सम्मिलित हो गए।

(३) मंगल पाण्डे :-

क्रांतिकारी मंगल पाण्डे को क्रांति के विस्फोट का जनक माना जाता है। बैरकपुर के सैनिक छावनी में सुनने को मिला की जो कारतूस तुम अपने मुख में रख कर खोलते हो उसमें गाय और सूअर की चर्बी लगी है। इस कथन की जाँच करने पर मालूम पडा की सचमुच ही कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी लगायी जाती है। इस घटना ने बैरकपुर में एक चिंगारी का रूप धारण कर लिया। मंगल पाण्डे ने भारतीय

सिपाहियोंकेआवाहन में कहा कि इसमें गाय तथा सुअर की चर्बी है इसलिए एक भी सिपाही कारतूस को हाथ नहीं लगायेगा और न ही मुँह मे रखकर उसे खोलेगा। अँग्रेज अधिकारी सार्जेण्ट मेजर ह्युसन ने मंगल पाण्डे को गिरफतार करना चाहा, इतने में मंगल पाण्डे ने चलाखी से ह्युसन पर गोली चलायी। बाद मे मंगल पाण्डे को गिरफतार करके फाँसी दी गयी। यही घटना क्रांति के अकालिक विस्फोट का कारण बन गयी।

सन् १८५७ ई. के स्वाधीनता संग्राम के प्रथम बागी के रूप में मंगल पाण्डे को इतिहास याद करता है। उसके तात्कालिक क्षोभ से अँग्रेजों को क्रांन्ति की भनक मिल गई औरवेसजग होकर क्रान्ति को कुचलने की योजना बनाने में सक्रिय हो गए। उन्हे क्रान्ति आन्दोलन को दबाने में सफलता भी मिली।

(४) ज्वालाप्रसाद :-

उपन्यास में ज्वालाप्रसाद क्रांतिकारी के रूप में सामने आते हैं। ज्वालाप्रसाद ने क्रांति संगठन में मदद की है।

(५) अवध के मौलवी अहमदुल्लाशाह :-

अहमदुल्लाशाह क्रांतिकारी के रूप में सामने आये हैं। उन्होने गाँव-गाँव घूमकर विशाल जनसभाओं को अपने प्रेरक भाषणोंसे क्रांति के लिए प्रेरित किया। क्रान्ति आन्दोलन की वैचारिक भूमिका बनाने में मौलवी अहमदुल्लाशाह का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

(ग) उपन्यास में नारी पात्र :-

मिलिन्द जी कृत " क्रान्तिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में प्रमुख नारी पात्रोंके रूप मे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बाजीराव पेशवा व्दितीय की पत्नी सरस्वतीबाई और तात्या टोपे की पत्नी जानकीबाई आदि पात्रों का चित्रण है। गौण नारी पात्रों के रूप में दिल्ली के बादशाह बाहादुरशाह जफर की बेगम जीनतमहल, अवध की बेगम हजरतमहल आदि उल्लेखनीय है। आलोच्च उपन्यास के नारी पात्रों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

(अ) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :-

मिलिन्द जी कृत "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास में तात्या टोपे के बाद महत्वपूर्ण पात्र के रूप में रानी लक्ष्मीबाई का उल्लेख आता है। लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनुबाई था। आगे चलकर झाँसी के राजा गंगाधरराव के साथ विवाह होने के बाद मनुबाई का नाम लक्ष्मीबाई रखा गया।

लक्ष्मीबाई के पिता अपनी पुत्री को साथ लेकर वाराणसी से बिठुर आकर बाजीराव के आश्रित बनकर रहने लगे थे। लक्ष्मीबाई बाजीराव पेशवा की छत्रछाया में पलकर बडी हुई। बाजीराव के दत्तक-पुत्र नानासाहब और तात्या टोपे दोनों लक्ष्मीबाई के हमउम्र थे। इसलिए ये तीनों एक साथ बडे हुए। मनुबाई को भी बाजीराव का प्रचुर वात्सल्य प्राप्त हुआ। वह शैशव अवस्था में ही शारीरिक व्यायाम तथा सैनिकशिक्षा में निपुण हो गयी। तथा उस क्षेत्र में नेतृत्व करने लगी। बालकों को व्यायाम के साथ जो सब प्रकार की सैनिकशिक्षा दी जाती थी, उसमें भी लक्ष्मीबाई किसी से पीछे नहीं रहती थी। लक्ष्मीबाई में शारीरिक तथा बौध्दिक क्षमता भी थी। उन्होंने अपनी सहेलियों को भी व्यायाम, सैनिकशिक्षा, बौध्दिक विकास तथा विवाजन में अपने साथ रखा। और उन्हें क्रांतियोजना के लिए प्रेरित किया।

झाँसी के राजा गंगाधरराव विधुर थे और लक्ष्मीबाई से उम्र में अधिक बडे थे। सामान्यत: यह एक विषम जोडा था, किंतु लक्ष्मीबाई ने गंगाधरराव से विवाह करना जिस कारण से स्वीकार किया था, वह क्रांतिकारी देशभक्ति की भावना से प्रेरित था। लक्ष्मीबाई ने गंभीरतापूर्वक विचार किया था कि झाँसी के राजा से विवाह कर लेना स्वीकार कर लेने से वह झाँसी राज्य का दुर्ग, सेना, शस्त्रास्त्र, कोष आदि स्वराज्य-क्रांति के लिए प्राप्त कर सकेंगी। लक्ष्मीबाई ने अपने विवाह के पूर्व जो बातें तात्या टोपे से कहीं थी, उन्हें उसने अपने विवाह पश्चात सत्य करके दिखा दिया।

झाँसी के राजा गंगाधरराव का देहांत हो गया और विदेशी अँग्रेजों ने दत्तक पुत्र को उनका उत्तराधिकारी स्वीकार न करके झाँसी के राज्य को हडप लेने का निश्चय घोषित कर दिया, तब झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी की जनता तथा सैनिकों के सहयोग से अत्यंत वीरतापूर्ण

संग्राम करके अँग्रेजों की सेना के छक्के छुडा दिए। अँग्रेजों की प्रशिक्षित विशाल सेना के सामने सफलता की किंचित भी आशा न रहने पर भी लक्ष्मीबाई अँग्रेजों की सेना से युध्द करती हुई तात्या टोपे की सेना से कालपी में जा मिली। लक्ष्मीबाई, नानासाहब, तात्या टोपे, अजीमुल्लाखाँ ने क्रांति संगठन बनाया। नानासाहब को क्रांति संगठन का अध्यक्ष बनाया गया। केवल नारी होने के कारण लक्ष्मीबाई को उच्च नेतृत्व का पद नहीं दिया गया।

ग्वालियर के युध्द में लक्ष्मीबाई अत्याधिक वीरता से लडी। उन्होने निश्चय कर लिया था कि प्राण देकर भी अँग्रेजों से झाँसी का बदला लेकर रहेंगी। किन्तु, राव साहब ने अपनी सत्तालोलुपता तथा उत्सवानंद-मोह में इतना अधिक समय नष्ट कर दिया था कि स्वराज्य-क्रांतिकारियों को अपनी शक्ति एवं साधनसंपन्नता कम पड गयी। अँग्रेजों ने अपनी शक्ति एवं साधनसंपन्नता अधिक बढा ली जिससे क्रांतिकारियों की विजय असंभव हो गई। लक्ष्मीबाई ने मरदाने वेश में दोनों हाथों में शस्त्रास्त्र ग्रहण करके युध्द में अँग्रेजों की सेना के छक्के छुडा दिए। किंतु बहुसंख्यक तथा अधिक साधनसंपन्न अँग्रेजी सेना को वह परास्त न कर सकी। युध्द करते हुए अँग्रेजों की सेनाओं के चारों ओर के घेरे तोडने के प्रयास के समय स्वर्णरेखा नदी पर लक्ष्मीबाई का घोडा अड गया तथा पीछे से अँग्रेज सैनिकों ने उन पर आक्रमण कर दिया। अविरत घोर युध्द करते-करते उन्होने अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। झाँसी के युध्द में लडते-लडते प्राणबलिदान कर देने की अपनी जो इच्छा वह पूर्ण नहीं कर पाई थी, उस इच्छा की पूर्ति उन्होने ग्वालियर में युध्द करते-करते वीरगति प्राप्त करके कर ली।

विशेषताएँ :-

मिलिन्द जी ने लक्ष्मीबाई का चित्रण करते समय इस पात्र की अनेक विशेषताएँ बताने का प्रयत्न किया है। लक्ष्मीबाई के चित्रण में लेखक को सफलता मिली है। लक्ष्मीबाई के चित्रण में ऐतिहासिकता है। लक्ष्मीबाई के स्वभाव की महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं- मातृभूमि प्रेम, त्याग, बलिदान, स्वाधीनता की भावना, शौर्य और साहस। बचपन से ही लक्ष्मीबाई व्यायाम, सैनिक शिक्षा, बौध्दिक विकास तथा विद्यार्जन में आगे थी। मिलिन्द जीने लक्ष्मीबाई का त्याग और बलिदान

की भावना को वास्तव चित्रण किया है। देश की स्वाधीनता के लिए झाँसी के विधुर राजा गंगाधरराव के साथ विवाह करना लक्ष्मीबाई ने स्वीकार किया था। नेतृत्व की समस्त विशेषताएँ क्षमताएँ होते हुए भी लक्ष्मीबाई को केवल नारी होने के कारण सेनापति पद से वंचित रखा गया फिर भी उसने शिकायत नहीं की।

लक्ष्मीबाई ने आजादी के लिए प्राणों का बलिदान देकर त्याग समर्पण का अध्याय भारतवासियों के सामने रखा।

रानी लक्ष्मीबाई के चरित्र-चित्रण के द्वारा उपन्यासकारने नारी शक्ति एवे त्याग का परिचय दिया है। लेखक स्पष्ट करते हैं कि लक्ष्मीबाई जैसी नारियाँ जिस देश में है वह देश आजाद होकर उन्नति के शिखर तक पहुंच जायेगा।

लक्ष्मीबाई का चित्रण उपन्यासकार ने ऐतिहासिकता को आधार बनाकर किया है। अनावश्यक विस्तार को टालते हुए किया हुआ लक्ष्मीबाई का चित्रण पाठक के दिल-दिमाग को प्रभावित करता है।

(आ) सरस्वतीबाई :-

सरस्वतीबाई बाजीराव पेशवा द्वितीय की पत्नी है। बाजीराव का जितना योगदान क्रांति में रहा, उतनाही योगदान सरस्वतीबाई का रहा है। सरस्वतीबाई बुध्दिमान, स्वाभिमानी और तेजस्विनी महिला थी। स्वामी ज्ञानदास जी ने बाजीराव को कही गुप्त बाते बतायी थी। वे बाते बाजीराव ने सरस्वतीबाई को बतायी। ज्ञानदास जी की प्रेरणा, उद्बोधन से सरस्वतीबाई संन्यासिनी का वेश धारण कर भारत भ्रमण के लिए निकली। उसने अपना जीवन देश के लिए अर्पित कर दिया। और गुप्त रूपमे क्रांति संगठन का कार्य करने लगी। अन्त तक सरस्वतीबाई संन्यासिनी के रूप में क्रांतिसंगठन का कार्य करती रही।

विशेषताएँ :-

मिलिन्द जी ने अनेक विवरणों के बीच सरस्वतीबाई के आदर्श चरित्र का उद्घाटन करके सिध्द किया है कि महिलाएँ भी राष्ट्रोत्थान में पूर्ण सहायक हो सकती है। कोई भी स्त्री अपनी

सुख-सुविधाएँ छोड देश के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकती है।

(इ) जानकीबाई :-

जानकीबाई तात्या टोपे की पत्नी है। वह स्वतंत्रता संग्राम के लिए कार्य करना चाहती है, किन्तु तात्या टोपे उन्हे क्रांति की चिंता से मुक्त कर स्वयं क्रांति में भाग लेते हैं। वे गृहस्थी की जिम्मेदारी जानकीबाई पर सौंपते हैं। जानकीबाई जीवन के अन्त तक गृहस्थी की जिम्मेदारी स्वयं उठाकर अपने पति को गृहस्थी की ओर से निश्चिंत रखती है। तात्या टोपे गृहस्थी का भार जानकीबाई को सम्भालते देख कहते हैं कि, - " यह तुम्हारा मुझ पर बहुत बडा उपकार है। तुम्हारी बहुत बडी देशसेवा है। यदि तुम यह कर्तव्य पालन नहीं करती तो, मैं क्रांति के लिए अभीष्ट कार्य नहीं कर पाता। " [२१] गृहस्थी की जिम्मेदारी से मुक्त होने के पश्चात अन्त में सरस्वतीबाई स्वयं स्वराज्य के लिए संन्यासिनी बन सेवा करने का निर्णय भी जानकी-बाईसे बताती है।

विशेषताएँ :-

जानकीबाई लक्ष्मीबाई सरस्वतीबाई की तरह त्याग और बलिदान की मूर्ति है। पति के आदेश को अपना सर्वस्व माननेवाली जानकीबाई सही अर्थों में आदर्श पत्नी - सहधर्मिणी है।

जानकीबाई के चरित्र चित्रण के द्वारा उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि केवल युध्दक्षेत्र में पराक्रम दिखाना ही देशभक्ति न होकर पति को पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त रखकर देश कार्य के लिए प्रेरित करना भी देश भक्ति का ही रूप है।

(ई) नारी पात्रों की विशेषताएँ :-

आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी के महत्वपूर्ण स्थान का वर्णन है। नारी को त्याग, बलिदान, समर्पण की मूर्ति माना गया है। प्राचीन काल से नारी को देवी माता के रूप में सम्मान दिया गया है। पति परायण नारी की महिमा गानेवाली भारतीय संस्कृति नारी के वीरांगना, साहसी रूप की ओर अनदेखा करती आई है।

तथापि नारी शक्ति से परिचित अनेक साहित्यकारों, समाजसुधारकों, नेताओं, धर्म संस्थापकों एवं प्रचारकों ने नारी के शौर्य पराक्रम को स्वीकार किया है। जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुष के साथ आगे बढनेवाली एवं पुरुष का साथ देनेवाली नारी का चित्रण अनेक साहित्यकारों ने किया है।

डॉ. जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द नारी शक्ति से परिचित होने के कारण राष्ट्रोत्थान में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारते हैं। इसी हेतु उन्होंने क्रांन्तिवीर तात्या टोपे उपन्यास में क्रान्ति में सम्मिलित शूर, साहसी, त्यागी देशभक्त नारियों की कहानी पाठक के सामने प्रस्तुत की है। राष्ट्रीय भावनासे प्रेरित नारी अपने व्यक्तिगत एवं पारिवारिक सुख-दुःख की ओर अनदेखी कर राष्ट्र निर्माण में जुट जाती है। उपन्यासकार ने इसी तथ्य को सरस्वतीबाई, जानकीबाई, झाँसी की रानी आदि के व्दारा स्पष्ट किया है। सरस्वतीबाई एक संन्यासिनी के रूप में देशाटन को निकल जाती है। वह लोगों में स्वाधीनता की भावना जगाती हुई क्रान्ति की भावना पैदा करती है। तात्या टोपे की पत्नी जानकीबाई अपने पति के निर्देश पर परिवार की सुरक्षा का भार वहन करती हुई पति को पारिवारिक बोझ से मुक्त रखती है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिए रणांगण में दोनों हाथों में तलवार लिए अद्भूत युध्द करती हुए ग्वालियर की भूमि पर बलिदान करती है। उसका जीवन आदर्श भारतीय नारी का जीवन रहा है।

(घ) चरित्र-चित्रण की विशेषताएँ :-

पात्रों की सम्यक योजना में डॉ. मिलिन्द जी पर्याप्त सफल हुए हैं। उपन्यासकार ने चरित्र-चित्रण में पात्रों की स्वभावगत विशेषताओं को दिया है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र इतिहास सम्मत है। सभी पात्रों के साथ लेखक की समान सहानुभूति रही है। उसमें ऐसे निरर्थक पात्र नहीं है, जिन्हे गणना के लिए रख दिया गया हो। ये सभी पात्र जीवन के विभिन्न दृष्टिकोणों के प्रतीक है। लेखक ने इनके बाहरी-भीतरी दोनों पक्षों का अंकन सफलता से किया है। उपन्यासकार पात्रों की मानसिकता से अपने पाठकों को तदुप करा सके तो वह सफल चरित्र चित्रण कहा जायेगा आलोच्य उपन्यास इस शर्त को पूरा करता है। आलोच्य उपन्यास

इतिहास सम्मत होने के कारण उसका प्रभाव घटनाओं, पात्रो पर देखा जा सकता है। पात्रों की मानसिकता, दृष्टिकोन, आपसी सम्बन्ध आदि पर इतिहास का प्रभाव है।

उपन्यासकारने कई पात्रों का चित्रण वर्ग प्रतिनिधि पध्दति के अनुसार किया है। तात्या टोपे, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब अजीमुल्लाखाँ, सरस्वतीबाई, जानकीबाई आदि पात्र पाठक का ध्यान आकर्षित करने में सफल हो गए हैं। पात्रों के प्रभावी चित्रण के कारण पाठक के मनमें देशाभक्ति की भावना जागृत होकर पात्रों के प्रति अपनत्व की भावना निर्माण होती है।

(C) कथोपकथन / संवाद :-

कथोपकथन को उपन्यास का आवश्यक तत्व माना जाता है। पात्रों के व्यक्तित्व के उद्घाटन और कथा क्रम के विकास के लिए इसका उपयोग किया जाता है। उपन्यास चाहे जिस किसी भी ढंग का क्यों न हो, कथोपकथन की श्रेष्ठता ही उसकी श्रेष्ठता का कारण होता है। इन सब बातों को पूर्ण करने के लिए उपन्यासकार कथोपकथन में उपयुक्तता, संक्षिप्तता, स्वाभाविकता, मनोवैज्ञानिकता का समावेश करता है। प्रत्येक कुशल उपन्यासकार कथोपकथनों के माध्य से अपने पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालता है, - " बिना संवाद के चरित्र चित्रण ऐसा ही है जैसा बिना खिडकियों और दरवाजों का कमरा। खिडकियों और दरवाजों से हम कमरे के भीतर प्रवेश पाते है। "[२२] आलोचकों का यह कहना उचित है उपन्यास की सफलता के हेतु कथोपकथन को सजीवता और सार्थकता आवश्यक मानी जाती है। कथोपकथन श्रृंखलाबध्द, प्रभावशाली और नाटकीय होना चाहिए। कथोपकथन का यथार्थ होना आवश्यक है और यथार्थ कथोपकथन ही स्वाभाविक होते हैं।

श्री मिलिन्द जी के " क्रान्तिवीर तात्या टोपे " उपन्यास के कथोपकथन में उर्पयुक्त सभी गुण पाये जाते हैं। यह उपन्यास तात्या टोपे के शौर्य और वीरता की कहानी है। उपन्यास में हिन्दी खडीबोली का प्रयोग किया है। जिससे उपन्यास यथार्थ जान पडता है। " क्रांन्तिवीर तात्या टोपे " के संवाद से प्रत्येक चरित्र का उद्घाटन अच्छी तरह से हुआ है। सन् १८५७ ई. के स्वतन्त्रता संग्राम का वर्णन इस उपन्यास का खास आकर्षण है। बीच-बीच में आनेवाले संवादों से पाठक उत्साही बनता है। यहाँपर " क्रांतिवीर तात्या टोपे " में प्रयुक्त संवादों की निम्नलिखित विशेषताएँ उपलब्ध होती हैं -

[१] कथोपकथन या संवाद की विशेषताएँ -

[अ] चारित्रिक विशेषताओं को प्रकाशित करनेवाले संवाद :

बाजीराव पेशवा व्दितीय जब स्वामी ज्ञानदास के पास जाते हैं, तब स्वामी बाजीराव को अपने देश के प्रति अपना कर्तव्य बताते हैं। और उन दोनों के संवादो से चारित्रिक विशेषताएँ दिखायी देती हैं। स्वामी ज्ञानदास बाजीराव से कहते हैं - " अब भी समय है। अपने इस निर्वासन को राम के बनवास की भाँति समझो ! तपस्या करो ! तपस्या के बिना शुभ कार्य संपन्न नहीं होते। केवल अपनी

ही दृष्टि से विचार करना बंद करो। केवल महाराष्ट्र ही की दृष्टि से भी विचार मत करो। समस्त भारतवर्ष की दृष्टि से विचार करो। स्वार्थकेंद्रित बनकर भारत के विभिन्न क्षेत्रों के शासक धीरे-धीरे साम्राज्यकांक्षी विदेशी आक्रमणकारियों के आश्रित बनते जा रहे हैं। स्वार्थत्याग करके और एकता के सूत्र में आबध्द होकर ही वे विदेशी शासन को भारत से निष्कासित कर सकेंगे। यदि वे फूट का विष नष्ट नहीं करेंगे, तो, उनसे स्वराज्यस्थापना की कोई आशा नहीं की जा सकेगी। "२३

प्रस्तुत संवाद से स्वामी ज्ञानदास की स्वाधीनता की कामना एवं संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधने की लालसा स्पष्ट होती है। स्वामी ज्ञानदास देशवासियों के मनमें स्वाधीनता प्रेम और एकता की भावना विकसित करना चाहते हैं।

आलोच्य उपन्यास में अनेक स्थानों पर पात्रों की चरित्रिक विशेषताओं को प्रकाशित करनेवाले संवादों का प्रयोग उपलब्ध होता है।

[आ] मनोभावों को व्यक्त करनेवाले संवाद :

कथोपकथन सरल एवं मनोवेगों को व्यक्त करनेवाला तथा चरित्र को विकसित करनेवाले हो ऐसा माना जाता है। " क्रान्तिवीर तात्या टोपे " उपन्यास के पात्र भी अपने भावों को व्यक्त कर पाये हैं। सरस्वतीबाई तात्या टोपे के बलिदान की सूचना मिलते ही जानकीबाई [तात्या टोपे की पत्नी] से मिलने आती हैं और अपनी ओर से समवेदना व्यक्त करती हुई कहती है " तात्या टोपे के बलिदान की सूचना मिलने पर भी मैंने अनुभव किया कि उनका बलिदान गर्व तथा गौरव का अनुभव करने के योग्य है। उनके वियोग पर समवेदना व्यक्त करने जनता के पास जाना भी उतना ही व्यापक तथा कठिन कार्य है। किंतु, अब तक मेरी वेदना असह्य हो चुकी है और मुझसे अब तुमसे मिले बिना नहीं रहा गया है। अज्ञातवासिनी होते हुए भी मैं तुम्हारे पास आई हूँ।"२४

सुख और दु:ख की परि-कल्पना करते हुए सरस्वतीबाई अपने भावों को जानकीबाई के सामने व्यक्त करती है। " जानकीबाई ने पूछा- माताजी, आप किस गहरी मनोव्यथा के कारण मौन हो गई ?
सरस्वतीबाई ने कहा - " सामान्य नारी समझती है कि धनसत्तासंपन्न व्यक्तियों की पत्नियाँ सुखी होती हैं। किंतु वह उनकी अंतर्व्यथा को नहीं जानती। एक अर्थ में

सामान्य नारी अधिक सुखी होती हैं। " [२५]

उक्त संवाद से धन-सत्ता- संपन्न परिवार की नारी की मनोव्यथा को उपन्यासकार ने प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है।

" अब अपने उस पुराने जीवन का स्मरण करना मेरे लिए निरर्थक है। उसे मैं बहुत पहले छोड चुकी हूँ। एक पुराने शासक की पुरानी पत्नी के रूप में मेरा इतना महत्व नहीं है कि मैं उस जीवन की स्मृतियों में समय नष्ट करूँ। "[२६]

उक्त संवाद से अपने पद अधिकार से वंचित नारी की व्यथा प्रकट होती है। प्राप्त परिस्थिति के साथ समझौता करनेवाली नारी की मानसिकता उपन्यासकारने सफलतापूर्वक अंकित की है।

[इ] अपनत्व की भावनावाले संवाद :

लेखक ने पति और पत्नी के बीच जो अपनत्व तथा पारिवारिक हँसी-मजाकके संवाद दिए हैं, वे बहुत ही मार्मिक बन पडे हैं। बाजीराव अपनी पत्नी सरस्वतीसे कहते हैं :-

" क्या मैं नितांत निरर्थक हूँ ? क्या मैं तुम्हारी तपस्या में तुम्हारे साथ नहीं चल सकूँगा ? सरस्वतीबाई ने हँसकर कहा - उससे तो बिलकुल भंडाफोड हो जाएगा। आप अपना राजसी स्वभाव छीपा न सकेंगे और लोग हँसकर कहेंगे कि यह कैसी तपस्विनी साध्वी है, जो वनवास और भ्रमण की तपस्या में भी अपने पति को साथ लिए-लिए फिरती है। बाजीराव भी हँस पडे। "[२७]

" जानकीबाई ने कहा कि यदि मैं यह आग्रह करूँ कि मैं स्वराज्यक्रांतिसंग्राम में सक्रिय भाग लूँगी और तुम परिवार तथा गृहस्थी का भार उठाओ, तो, तुम्हें कैसा लगेगा ? " बहुत अच्छा !" कहकर तात्या टोपे हँस पडे। जानकीबाई को भी हँसी आ गई। "[२८]

इस प्रकार के संवादों से पारिवारिक प्रेम-अपनत्व की भावना झलकती है।

[ई] वातावरण निर्मिति करनेवाले संवाद :

जब तात्या ने लक्ष्मीबाई व्दारा स्वीकृत गंगाधरराव के साथ के विवाह के प्रस्तावकेबात जानी, तब वह लक्ष्मीबाई के इस साहसपूर्ण आत्मबलिदान पर अवाक रह गए। लक्ष्मीबाई ने तात्या टोपे से कहा कि, " आप मेरे सगे अग्रज से भी बढकर हैं, अत: आपको मेरा अधिक उम्र के विधुर राजा से विवाह करना आश्चर्यजनक

लग रहा होगा, किंतु मैं आपसे अनुरोध करती हूँ कि आप मेरे भविष्य के संबंध में बिलकुल चिंतित न हों। मुझे मेरी भारतमाता अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है और मैं अपने देश के स्वराज्य के लिए अपने ऐसे सर्वस्व का भी बलिदान कर सकती हूँ जो मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय प्रतीत होता है। "

तात्या टोपे ने कहा -"बहन लक्ष्मीबाई, तुम्हारी त्याग और बलिदान की उच्च भावना धन्य है। तुम स्वदेश के स्वराज्यक्रांतिसंग्राम में अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ का बलिदान कर रही हो। इतना बडा बलिदान बहुत कम व्यक्ति कर सकते हैं। " [२९]

लक्ष्मीबाई ने कहा -"आदरणीय तात्या, तुम जो आत्मबलिदान कर रहे हो, वह इससे भी बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह सब जानते हैं कि स्वराज्यक्रांतिसंग्राम के सबसे अधिक समर्थ सेनापति बनने योग्य तुम्ही हो, किंतु , तुम जानबूझकर ऐसा वातावरण बनाते जा रहे हो कि, सबसे अधिक गंभीर संकट तो तुम स्वयं सहन करते जाओ और क्रांति के नेता का पद अन्य व्यक्तियों को दो। इससे अधिक स्वार्थत्याग तथा आत्मबलिदान और क्या हो सकता है। " [30]

उक्त संवादों से पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ प्रकाशित होकर वातावरण को निर्मिति होती है। इस संवाद के व्दारा नेता के लिए आवश्यक त्याग समर्पना-दि गुणों की जरूरत पर लेखक प्रकाश डालते हैं।

(उ) पात्रानुकूल संवाद :

सहजता, उपयुक्तता, सरलता, सूक्ष्मता, संक्षिप्तता व नाटकीयता कथोपकथन के विशिष्ट अंग है। जिनका उपयोग " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में खूब अच्छी तरह से किया गया है। इसके लिए सरल एवं सुबोध शैली और पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग अनिवार्य शर्त है जिसे श्री मिलिन्दजी ने पूरा किया है।

लक्ष्मीबाई और तात्या के अन्तर्द्वन्द का चित्रण मिलिन्दजी की सफल रचना शैली का उदाहरण है। जैसे -

" मेरी बलिवती इच्छा थी की मैं झाँसी की रक्षा के हेतु लडते-लडते अपने प्राणों का बलीदान कर दूँ, किंतु अंतत: मैं इस निश्चय पर पहुँची कि मुझे कालपी पहुँचकर भारत को विदेशी अँगेजों के शासन से मुक्त कराने में आपसे सहयोग करना चाहिए तथा झाँसी की मुक्ति की बात को भारत की मुक्ति से मिलाकर सोचना

चाहिए। यदि भारत मुक्त होगा, तो, झाँसी भी मुक्त हो जायेगी। अब मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं आपके सुयोग्य नेतृत्व में भारत की मुक्ति के संग्राम में प्राणों का बलिदान करूँ। "[31] तात्या टोपे आगे कहते हैं। - " मैं चाहता हूँ कि मेरे साथ विशाल, सदृढ, सुसंगठित तथा श्रेष्ठ शास्त्रास्त्रों से युक्त सेना तथा तुम जैसे वीर सहयोगी बने रहें। किंतु, यदि फिर भी असफलता ही प्राप्त हो, तो भी, मैं अंत तक साहस नहीं छोडना चाहता। मैं यदि अकेला ही रह जाऊँगा, तो भी मैं आशा नहीं छोडूंगा तथा स्वर्गादपि गरीयसी जन्म-भूमि को स्वराज्ययुक्त एवं स्वतंत्र बनाने का प्रयास अपने जीवन के अंतिम क्षणतक करता रहूँगा। मातृ-भूमि को स्वतंत्र देखने की उत्कट अभिलाषा मेरे हृदय में है। किंतु, यदि वह अभिलाषा पूर्ण न भी हो पाई, तो भी, मैं यह आशा लेकर मृत्यु का स्वागत करूँगा कि मेरे पश्चात आगामी पीढी भारतमाता को स्वतंत्रता प्राप्त कराने में सफल होगी।[32]

इस प्रकार के संवादों से पात्रों की स्वभावगत विशेषताएँ प्रकाशित होती हैं। तात्या टोपे और लक्ष्मीबाई जीवन के अंतिम दम तक संघर्ष के मैदान में लडते रहना चाहते हैं। इस प्रकार का अटल निश्चय देशभक्तों के लिए आवश्यक है इस ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करने में उपन्यासकार सफल हो गए हैं।

[ऊ] प्रसंगानुकूल संवाद :

बाजीराव असमंजस में पड गए हैं यह देख सरस्वतीबाई बाजीराव को परामर्श देती है, - " आप बाह्य रूप से बिठूर में भी उसी प्रकार रहिएगा, जिसप्रकार आप इसके पूर्व पुणे में रहते आए हैं। इससे आप पर अँग्रेजों को संदेह नहीं होगा। यह दूसरी बात होगी कि आप पुणे से अपने पुराने राज्य में जितने स्वतंत्र रहते आए थे, उतने बिठूर में नहीं रह सकेंगे। तपस्या का जीवन बिताना आपके लिए संभव न होगा। पुरानी आदतें बदलना बहुत कठिन होता है। आंतरिक एवं गुप्त रूप से आप जो सहायता क्रांतिकारियों की कर सकें, यह अवश्य कीजिएगा, किंतु, अन्य लोगों को क्रांति के नेतृत्व के पूर्ण अवसर दीजिएगा। कुछ ही समय में अगली पीढी, आपके संरक्षण में, क्रांतिसंगठण के लिए, तैयार हो जायगी। तपस्या भी अनिवार्य है, किंतु तपस्या आप न करके मुझे तपस्या करने का अवसर प्रदान कीजिए। आपके उस कार्य का पूर्ण उत्तरदायित्व मैं ग्रहण करने को तत्पर हूँ। मुझे तपस्या के लिए विदा कीजिए। भारत की जनता में तपस्वी साधुओं की भाँति

तपस्विनी साध्वियों के प्रति भी श्रध्दा का भाव है। मैं साध्वी के रूप में भारतभ्रमण करूँगी। इससे अधिक श्रेयस्कर मेरे जीवन का और कोई उपयोग क्या हो सकेगा कि मैं जन्मभूमि की स्वतंन्त्रता के संग्राम में सहयोग कर सकूँ। " इस प्रकार प्रसंगानुकूल संवादों के प्रयोग से उपन्यास में रोचकता आ गयी है।[33]

इस तरह " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में कथोपकथन में कही लम्बे संवाद आ गये हैं तो कही कथा को गति देनेवाले छोटे-छोटे संवाद आ गये हैं। इस तरह के कथोपकथन से कथा का विकास अच्छी तरह से होकर प्रभाव वृध्दि हो गई है। अनेक स्थानोंपर नाटकीय, अलंकृत भाषा का प्रयोग कर उपन्यासकार ने रोचकता-सरसता का समावेश किया है।

उपन्यासकार व्दारा प्रयुक्त संवादों से कथा का विकास हुआ है और पात्रों की स्वभावगत विशेषताएँ प्रकाशित हो गई हैं। कुल मिलाकर कथोपकथन की दृष्टि से उपन्यासकार को काफी सफलता मिल गई है।

(ड)] <u>देशकाल - वातावरण</u> :

उपन्यास की स्वाभाविकता की दिशा में देशकाल और वातावरण की रक्षा का प्रमुख स्थान होता हैं। " उपन्यास में वातावरण अथवा पृष्ठभूमि का महत्व शरीर में रोढ की मजबूती के महत्व की तरह होता है। उचित वातावरण का बल पाकर कथानक पुष्ट हो जाता है, पात्र सजीव हो उठते है, संभाषण एवं कथोपकथन अपने पूर्ण अर्थ और अभिप्राय को व्यक्त करने में सफल रहता है। "[34]

उपन्यासकार को देशकाल का चित्रण करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि वह कथानक के स्पष्टीकरण का साधन ही रहें, स्वयं साध्य न बन जाय। इसी प्रकार प्रसंगानुसार उपन्यासों में प्रकृति चित्रण भी किया जाना चाहिए। प्रकृति चित्रण से पात्रों को विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न मनः स्थितियों एवं प्रक्रियाओं तथा उनके संस्पर्श से उनके बनते-बिगडते चेतन मन की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया जाता है।

देशकाल तथा वातावरण के अंतर्गत आचार-विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन और राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियोंका वर्णन आ जाता है। ऐतिहासिक उपन्यास में ऐतिहासिक घटनाओंका, पात्रों का, स्थलों का ही चित्रण होता है। श्रेष्ठ उपन्यासकार देशकाल वातावरण का सजीव अंकन कर उपन्यास को प्रभावी बनाता है।

मिलिन्द जी की विशेषता रही है देशकाल वातावरण का सजीव चित्रण। " क्रान्तिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में देशकाल वातावरण " का विवेचन प्रस्तुत अध्याय में संक्षिप्त रूप में दिया है क्योंकि " क्रांन्तिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में " ऐतिहासिकता " शीर्षक अध्याय में राजनैतिक, सामाजिक, और धार्मिक परिस्थितियोंका वर्णन होने के कारण दुहरावट टालने के हेतु यहाँ केवल संकेत दिया है। -

" क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास प्रमुख घटना सन् १८५७-५८ ई. स्वाधीनता क्रान्ति को लेकर लिखा है। जिसके प्रमुख नायक तात्या टोपे हैं। वे सन १८५७-५८ ई. की महाक्रांति के केन्द्र थे। बिठूर और कानपुर के क्रांतिकार्य का चित्रण आलोच्य उपन्यास में किया है अन्य क्षेत्रों मेरठ, दिल्ली आदि का केवल उल्लेख मात्र कर भारत व्यापी क्रान्ति का संकेत रूप में चित्रण किया है। इस युग का वातावरण इस प्रकार था:-

[१] राजनीतिक परिस्थिति :

" क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था का चित्रण श्री. मिलिन्दजी ने किया है। सन् १८५७-५८ ई. के स्वतन्त्रता संग्राम में क्रांन्ति के लिए कूद पडे बिठूर के बाजीराव व्दितीय पेशवा को अंग्रेजों ने सत्ताच्युत कर दिया था। उनके देहान्त के पश्चात पुत्र नानासाहब को उनकी मिलनेवाली पेन्शन अंग्रेजों ने बंद कर दी थी। सातारा के छत्रपति प्रतापसिंह को पदच्युत कर दिया था। अवध को अँग्रेजी राज्य में मिला लिया था। झाँसी राज्य को अँग्रेजी राज्य में मिलाने के हेतु से दत्तक पुत्र पर बंदी लगायी। बहादुर शाह जफर से दिल्ली की सत्ता छीन ली थी। सैनिकों के असंतोष के वास्तविक कारण जानकर उन्हें दूर करने के बदले उनके नेता मंगल पाण्डे को फाँसी दे दी। आदि कारण इतिहास की पृष्ठभमि के रूप में मिलते हैं। सन् १८५७-५८ स्वतन्त्राता संग्राम में विशेष नाम उल्लेखनीय हैं तात्या टोपे, [रामचंद्रराव] लक्ष्मीबाई [मनुबाई] धोंडोपंत अर्थात नानासाहब पेशवा, दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह जफर, कुँवरसिंह, मंगल पाण्डे, अजीमुल्लीा खाँ, बाजीराव पेशवा व्दितीय आदि। मिलिन्द जी के उपन्यास में सभी ऐतिहासिक पात्रों का समावेश हैं। उपन्यास में प्रसिध्द घटनाओं, तिथियों, घटना स्थलों का वर्णन ऐतिहासिकता की कैसोटी पर स्वरा उतरता है।

[२] सामाजिक परिस्थिति :

श्री मिलिन्दजी की यह विशेषता रही है कि वे सीधे - सीधे जनभावनाओं से जुडने में विश्वास रखते हैं। वे अपने काल की राजनीतिक उथल-पुथल के साथ - साथ सामाजिक घटनाओं को भी बताने का प्रयास करते हैं। अंग्रेज शासकों की नीतियों का भारतीयों के सामाजिक जीवन पर भी बुरा प्रभाव पडा है।

अंग्रेजों ने अपने व्यापारी कारोबार का विस्तार भारत भर कर दिया, जिससे छोटे-छोटे भारतीय उदयोगधंदे बन्द हो गये। अत: भारतीय जनता अंग्रेजों से असंतुष्ट हो गयी। अंग्रेजों के अत्याचार बढने के कारण उच्च वर्ग के लोग जैसे राजा, महाराजा, नवाब, राणियाँ साथ-साथ आम जनता ने भी अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भूमिकाअपनायी। अंग्रेजों की नीति ने भारतीय सैनिकों, कुलीनों, एवं राजा-महाराजाओं में असंतोषकीज्वाला प्रज्वलित कर दी जो समय पाकर संघर्ष के रूप में प्रकट हो गयी।

[३] धार्मिक परिस्थितियाँ :

मिलिन्द जी ने प्रस्तुत उपन्यास में राजनीतिक, सामाजिक, परिस्थितियों के साथ - साथ धार्मिक परिस्थितियों को बहुत विस्तार से बताने का प्रयास किया है। लार्ड डलहौसी व्दारा गोद लेने की प्रथा का निषेध भी हिन्दू-धर्म शास्त्र के अन्दर हस्तक्षेप माना गया और इससे हिन्दुओं की धार्मिक मान्यताओं को बडी भारी ठेस लगी। हिन्दुओं के मन में यह शंका उत्पन्न हो गयी कि अँग्रेज उनके धर्म को नष्ट भ्रष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

बंगाल के बारकपुर के अँग्रेजों के भारतीय सैनिकों के केंद्र में भारतीय सैनिकों को एक नए प्रकार की बंदूकें दी गई, जिनके कारतूसों के आवरणों को दाँतों से तोडना पडता था। इन कारतूसों के विषय में यह अफवाह फैल रही थी कि उनमें निषिध्द चरबी लगी होती है। भारतीय सैनिकों ने इसे अपनी धार्मिक परंपरा की भावना के विरुध्द समझा। उन्होंने अपने अँग्रेज अधिकारियों से कहा कि वे उक्त नवीन कारतूसों का उपयोग न करेंगे। अँग्रेज अधिकारियों ने इसे अपनी अवज्ञा समझकर अपनी उद्धत मनोवृत्ति के कारण भारतीय सैनिकों का दिल दुखा

दिया, उन्हें समझाने के उचित प्रयत्न नहीं किए और उन कारतूसों का उपयोग करने पर जोर देने लगे। भारतीय सैनिक अपने निश्चय पर दृढ बने रहें। तब सेना के उस अंग को अनुशासनहीन घोषित करके उसके सैनिकों को नि:शस्त्र करने के लिए बर्मा से अंग्रेजों की एक सेना बुलाई गई। इससे बारकपुर के भारतीय सैनिकों का असंतोष और भी बढ गया। यह स्थिति अंग्रेज अधिकारियों की अत्याधिक उध्दतता से उत्पन्न हुई थी। किंतु इससे निर्धारित तिथि के पूर्व ही क्रांति के विस्फोट होने लगे।

[४] सांस्कृतिक उत्सव :

मिलिन्द जीनेअन्य उपन्यास कारों की तरह प्रस्तुत उपन्यास में उत्सव का उल्लेख कर उपन्यास के वातावरण को सजीव बनाया है। उपन्यास में रक्षा-बंधन के उत्सव को महत्व दिया है। रक्षाबंधन के दिन, लक्ष्मीबाई ने क्रांतियोजना के अपने सहयोगियों और सहयोगिनियों को एक स्थान पर एकत्र करके उनसे कहा कि आज क्रांतियोजना की व्रतधारिणियाँ व्रतधारी बंधुओं के राखी बाँधकर उनसे यह आशा करती हैं कि वे क्रांति के कर्तव्य के प्रति अपने को दृढता मे आबध्द समझेंगे। तात्या टोपे उन सब में अग्रज थे। इस अवसर पर तात्या के नेतृत्व में सबने दृढ संकल्प की शापथ ग्रहण की। व्रतधारियों की भाँति व्रतधारिणियों ने भी दृढता की शापथ ग्रहण की। यह एक अत्यंत स्फूर्तिपद आयोजन रहा।

श्री मिलिन्द जी ने " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में देशकाल तथा वातावरण का वर्णन इतिहास के अनुरूप किया है। लेखक ने कल्पना का भी पुट ले लिया है किन्तु ऐतिहासिक उपन्यास होने के कारण ऐतिहासिक वातावरण के लिए भी उचित पृष्ठभूमि तैयार कर दी है। जिससे उपन्यास में सभी तत्कालीन परिस्थितियोंका सजीव चित्र खींचा गया है। व्यवसायिक ईस्ट इंडिया कंपनी की साम्राज्यवादी कूटनीति के विरोध में किस प्रकार स्वतन्त्रता की भावना राष्ट्र व्यापी होती गई, इसका शोचक वृत्तांत इस उपन्यास में दिया गया है। मिलिन्द जी स्वयँ भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से संबंध रखते हैं। अत: वे सहज ही इस आन्दोलन की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को आत्मसात कर सके हैं।

(E) भाषा :-

भाषा भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। और अभिव्यक्ति का ढंग

या प्रणाली ही शैली है। निस्संदेह उपन्यास की सफलता में उसकी भाषा का प्रमुख स्थान रहता है भाषा जितनी ही सरल, प्रांजल, मधुर, भावाभिव्यंजक और बोधगम्य होती है, उतनी ही प्रभावोत्पादक भी होती है। कभी-कभी उपन्यासकार युग विशेष या स्थान विशेष का चित्रण करते समय तद्युगीन शब्दों या स्थानीय शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग करते हैं, पर इनके कारण कभी-कभी स्वाभाविकता को क्षति भी पहुँचती है।

" क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में लेखक ने समग्र विवरण इतिहास सम्मत बताया है। अत्यधिक स्वच्छ, प्रांजल और प्रभावी भाषा प्रयोग से रचना स्तरीय बन गई है। उपन्यास की सीधी - सादी और प्रवाहपूर्ण भाषा है। ऐतिहासिक वातावरण उपस्थित करने के हेतु लेखक ने खडीबोली को अपनाया है। यदयपि उपन्यास की भाषा आज, प्रसाद एवं माधुर्य गुणों से ओतप्रोत है। उपन्यास में जहाँ भावों, विचारों, अनुभूतियों और कल्पना की उत्कृष्टता है, वही परि-मार्जित और ललित्यपूर्ण भाषा की विदग्धता भी है।

पात्र और प्रसंग के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग हुआ है। पात्रों में होनेवाले संवादों की भाषा भी कुतूहलपूर्ण तथा प्रवाहात्मक है। उपन्यास में उर्दु, अंग्रेजी, मराठी, संस्कृत आदि शब्दों का प्रयोग किया है। इँगलिस्तान, मुकदमा, पेशी, चबुतरा, तरका आदि उर्दू शब्द हैं। ईस्ट इंडिया कम्पनी, व्हिक्टोरिया आदि अंग्रेजी और मोरेचे जैसे मराठी शब्द मिलते हैं। संस्कृत शब्द वाणिज्य, स्वामी आदि हैं। " क्रांतिवीर तात्या टोपे " में सन् १८५७ -५८ ई.की ऐतिहासिक घटना होने के कारण भाषा सरल एवं प्रभावी रही है। ऐतिहासिक उपन्यास होने के कारण युगीन पृष्ठभूमि का वर्णन कर उपन्यास की भाषा की विशेषता दिखायी है।

(F) शैली :-

भाषा की तरह उपन्यासों में शैली का भी महत्त्व है। यहाँपर निम्न शैलियाँ प्रचलित है, - " ऐतिहासिक उपन्यासों में शैली के तीन रूप दिखाई पडते हैं, वर्णनात्मक, कथात्मक तथा संवादात्मक। "[३५] वर्णनात्मक शैली के अंतर्गत वस्तुओं, नगरों, दृश्यों, नदियों आदि का वर्णन अधिक मात्रा में आता है। कथात्मक शैली में लेखक आरम्भ से ही कथा कहने लगता है। संवादात्मक शैली के उपन्यासों में कथोपकथन को अधिक स्थान मिलता है।

मिलिन्दजी ने " क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास के अंतर्गत वस्तुओं, नगरों, स्थलों, नदियों आदि के वर्णन के समय वर्णनात्मक शैली को अपनाया। लेखक ने आरम्भ से कथा की शुरुआत पात्रों के वार्तालाप में संवाद शैली का प्रयोग किया है। तात्पर्य यह है कि उपन्यासकार ने कथात्मक पध्दति का स्वीकार किया है। इससे यह उपन्यास वर्णनात्मक, कथात्मक और संवादात्मक शैली के प्रभावी, सुनियोजित, आकर्षक प्रयोग लिया है।

(G) शीर्षक :-

उपन्यास में शीर्षक महत्त्वपूर्ण है। शीर्षक से ही उपन्यास के नायक की व्यक्तिगत विशेषताओं का चित्रण होता है। उपन्यास जीवन के किसी मार्मिक पक्ष का रहस्योद्‌घाटन करता है। अत: उसके शीर्षक में उसकी प्रतिच्छाया रहनी चाहिए। उपन्यास के प्रति पाठकों में उत्सुकता, आकर्षण आदि भावों को जागृत करने का श्रेय शीर्षक का होता है। प्रस्तुत उपन्यास " क्रांतिवीर तात्या टोपे " का शीर्षक तात्या टोपे की व्यक्तिगत विशेषताओं और उनका समस्त जीवन प्रस्तुत करने में समर्थ हो गया है। प्रस्तुत शीर्षक में केंद्रबिंदु है- रामचंद्र पांडुरंग येवलेकर, जो इतिहास में तात्या टोपे के नाम से मशहूर हैं। विदेशी सत्ता के खिलाफ सन् १८५७ के संग्राम में देशभक्त बहादुर सेनापति के रूप में तात्या टोपे की क्रांतिकारिता व्यक्त हो गई है। तात्या टोपे के अन्तर्द्वन्दों और मुसीबतों के बीच उनके महान बलिदान आदि यहाँपर महत्त्वपूर्ण बन पडा है। जिसका प्रभाव भारतीय जनता पर पडा हुआ दिखायी देता है। इस शीर्षक को देखते ही उपन्यास पढने की लगन एवं इच्छा निर्माण हो जाती है। यह शीर्षक छोटा होकर भी अच्छा रहा है। इस शीर्षक में कौतुहल निर्माण करने की शक्ति है। यह शीर्षक विवेच्य विषय को स्पष्ट कर लेखक के उद्‌देश्य पूर्ति में सहाय्यक सिध्द होता है।

" क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास में उद्‌देश्य :

(H) उद्‌देश्य :-

हम आपने नीजी जीवन में भी किसी निश्चित प्रयोजन या उद्‌देश्य को सामने रखकर कोई ठोस कदम उठाते हैं। उसी प्रकार उपन्यासकार अपने उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए उपन्यास लिखता है। उपन्यास मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान भी प्रदान करता है। वह मनुष्य के अन्दर और बाहर की सभी प्रवृत्तियों को दिखाकर उनका स्पष्टीकरण करता है, साथ ही जीवन को प्रेरणा देता है। व्यक्ति

और समाज का अध्ययन करने के साथ - साथ मनुष्य को समग्र रूप में समझकर उसके जीवन के सात्त्विक लक्ष्यों को प्रकट करना भी उपन्यास का ध्येय है। उत्कृष्ट कोटि के उपन्यास वही हैं जो किसी न किसी विशेष उद्देश्यों का प्रतिपादन करते हैं। महान तथा प्रभावशाली उद्देश्यों की अभिव्यक्ति करनेवाले उपन्यास पाठकों को प्रभावित करते हैं। पात्रों व्दारा अपने उद्देश की अभिव्यक्ति करना अधिक सुंदर, और कलात्मक है । यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि उपन्यासकार मुख्य रूप से कलाकार है। वह सौंदर्य का सृष्टा है। उसका कार्य उपदेश या प्रचार नहीं है। फिर भी विव्दानोंव्दारा गिनाए गए उपन्यास के उद्देश्य इस प्रकार हैं - " १] केवल मनोरंजन, २] मनोरंजन, शिक्षा तथा उपदेश, ३] सिध्दान्त - प्रचार एवं वर्ग-चेतना को प्रखर करना और ४] जीवन और व्यक्ति के प्राकृत एवं अति यथार्थवादी अंकन का प्रयास करना। " [३६]

" क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास का उद्देश :

उपन्यासकार उपन्यास लिखने के लिए निश्चित उद्देश को सामने रखता है। उसी प्रकार मिलिन्द जी ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में निश्चित उद्देश्य प्रर्ति के लिए इतिहास के तथ्यों, घटनाओं एवं पात्रों को लेकर लिखा है।

" क्रांतिवीर तात्या टोपे " उपन्यास सत्य ऐतिहासिक घटना सन् १८५७ ई.के स्वतन्त्रता संग्राम के प्रधान सेनापति तात्या टोपे को लेकर लिखा है। मिलिन्द जी इस उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए भूमिका में लिखते हैं, " केवल एक लेखक ही के रूप में नहीं, सन् १९२० से १९४७ तक के भारतीय स्वतंन्त्रत संग्राम के एक विनम्र सैनिक के रूप में भी, मैंने इस अपना एक पावन कर्तव्य समझा कि मैं स्वतंत्रासेनानी तात्या टोपे पर यह उपन्यास लिखूँ। " [३७]

अपने जीवन के पवित्र कर्तव्य के रूप में " तात्या टोपे " के पराक्रम का वर्णन करनेवाले मिलिन्द जी का उद्देश तात्या टोपे का प्रामाणिक जीवन चरित्र प्रस्तुत करता है। साथ ही साथ विशेष दृष्टिकोन तथा उद्देश्य से उन्हें सन् १८५७ ई.को इतिहास- प्रसिध्द क्रांति तथा उससे सम्बध्द पात्रों को भी प्रस्तुत करना है। उसे अंग्रेजों कोजीत तथा भारतीयों की हार के ऐतिहासिक कारणों का चित्रण-विवेचन करना है तथा ऐतिहासिक उपन्यासकार के समान तत्कालीन युग-जीवन को साकार करना है। उन्हें तात्या टोपे के विचारों को ही स्पष्ट नहीं करना, अपनेदृष्टिकोन की स्थापना करते हुए वर्तमान कालीन प्रश्नों समस्याओं

के समाधान के संकेत भी देने हैं।

लेखक मिलिन्द जी के उपन्यास " क्रांतिवीर तात्या टोपे " के शीर्षकानुसार तात्या का प्रामाणिक जीवन चरित्र प्रस्तुत करना ही इसका प्रमुख उद्देश है। उपन्यासकार का उद्देश्य यह भी रहा है कि पाठक को १८५७ के स्वाधीनता संग्राम का परिचय देकर राष्ट्रीयता की भावना विकसित करना।

सारांश :-

लेखक यह उपन्यास लिखने में सफल बन गए हैं। कथाकार तात्या टोपे के माध्यम से भारतीय स्वतन्त्रतासंग्राम के दृश्यों को प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं और आशा की जानी चाहिए कि ऐसी कृतियाँ नयी पीढी को अपने सामाजिक दायित्व का एहसास करानी रहेंगी। कृति की सबसे बडी सार्थकता उसकी राष्ट्रीय चेतना में है और इस दृष्टि से एक प्रभावी प्रयत्न रहा है।

	लेखक	पुस्तक	पृष्ठ क्र.
१]	नायक प्रविण	यशपाल की औपन्यासिक शिल्प	१३५
२]	मिश्र दुर्गाशंकर	साहित्यिक निबन्ध	०९५
३]	मिलिन्द जगन्नाथप्रसाद	क्रांतिवीर तात्या टोपे	०११
४]	"	"	०११
५]	"	"	०३०
६]	"	"	०५७
७]	श्रीव्यथित ह्रदय	स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी	०२३
८]	मिलिन्द जगन्नाथप्रसाद	क्रांतिवीर तात्या टोपे	०२२
९]	नगेन्द्रनाथ वसु	विश्वकोश [खण्ड-९]	३४६
१०]	मिलिन्द जगन्नाथप्रसाद	क्रांतिवीर तात्या टोपे	०४७
११]	"	"	०४७/४८
१२]	"	"	०३१
१३]	"	"	०३५
१४]	"	"	०८५
१५]	श्री व्यथित ह्रदय	स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी	०२५
१६]	मिलिन्द जगन्नाथप्रसाद	क्रान्तिवीर तात्या टोपे	०८२
१७]	वर्मा वृन्दावनलाल	झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	०७६
१८]	मिलिन्द जगन्नाथप्रसाद	क्रांतिवीर तात्या टोपे	०६८
१९]	"	"	०२८
२०]	श्री व्यथितह्रदय	स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी	०१९
२१]	मिलिन्द जगन्नाथप्रसाद	क्रांतिवीर तात्या टोपे	०४७
२२]	अग्निहोत्रि नारायण	उपन्यास तत्व एवं रूप विधान	०९४
२३]	मिलिन्द जगन्नाथप्रसाद	क्रांतिवीर तात्या टोपे	७१०
२४]	वही	वही	०८४
२५]	वही	वही	०८५
२६]	वही	वही	०८५
२७]	वही	वही	०१८
२८]	वही	वही	०४७
२९]	वही	वही	३०/३१

३०]	वही	वही	०३१
३१]	वही	वही	०५६
३२]	वही	वही	०५७
३३]	वही	वही	०१७
३४]	अग्निहोत्रि नारायण	उपन्यास तत्व एवं रूप विधान	५३०
३५]	"मधुर" रामनारायण सिंह	हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास	३३७
३६]	अग्निहोत्रि नारायण	उपन्यास तत्व एवं रूप विधान	१८३
३७]	मिलिन्द जगन्नाथप्रसाद	क्रांतिवीर तात्या टोपे [भूमिका]	००४